चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

पाठ्यक्रम एम0 ए0 हिन्दी
(वर्ष 2014–15 से प्रभावी)

सेमेस्टर प्रथम

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास
2 प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य
3 नाटक एवं रंगमंच
4 प्रयोजनमूलक हिन्दी
5 प्रयोगात्मक

सेमेस्टर द्वितीय

1 उत्तर मध्यकालीन काव्य
2 कथा–साहित्य
3 कथेत्तर गद्य साहित्य
4 भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
5 प्रयोगात्मक

सेमेस्टर तृतीय

1 आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)
2 भारतीय काव्यशास्त्र
3 विशिष्ट रचनाकार (कोई एक विकल्प)
(क) कबीरदास (ख) सूरदास
(ग) गोस्वामी तुलसीदास (घ) जयशंकर प्रसाद
(ड) मुंशी प्रेमचन्द (च) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
4 पत्रकारिता–प्रशिक्षण
5 प्रयोगात्मक

सेमेस्टर चतुर्थ

1 छायावादोत्तर काव्य
2 पाश्चात्य काव्यशास्त्र
3 विशिष्ट साहित्य–धारा (कोई एक विकल्प)
(क) भारतीय साहित्य (ख) कौरवी लोक साहित्य
(ग) प्रवासी हिन्दी साहित्य (घ) प्राचीन भाषा–साहित्य (कोई एक विकल्प)
(i) संस्कृत, (ii) प्राकृत–अपभ्रंश
4 हिन्दी आलोचना
5 (क) लघु शोध प्रबन्ध (ख) निबन्ध लेखन

पाठ्यक्रम शिक्षण हेतु सामान्य निर्देश

1. आंतरिक एवं बाह्य परीक्षाएं क्रमशः 50–50 अंकों की होगी ।
2. आंतरिक मूल्यांकन सतत् कक्ष शिक्षण के क्रम में प्रत्येक सत्र में निम्नानुसार होगा–

1– दो सत्र परीक्षाएँ,	**30 अंक**
2– संगोष्ठी पत्र लेखन, प्रस्तुतीकरण	**10 अंक**
3– क्विज टेस्ट, पुस्तकालय कार्य, गृहकार्य मूल्यांकन	**10 अंक**

3. संबंधित परीक्षाओं में सभी इकाईयों (यूनिट) से अनिवार्यतः प्रश्न पूछे जाएंगे। शिक्षण इकाईयों (यूनिट) के क्रम में ही कराया जाएगा (जिससे आन्तरिक परीक्षा के लिए सुविधा रहेगी)।
4. शिक्षण में आधार सामग्री, आलोचनात्मक सामग्री, शोध पत्र–पत्रिकाओं, साहित्यिक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं के अलावा संबंधित प्रश्नपत्र में प्रायोगिक अथवा प्रयोगशालाओं पर आधारित अध्ययन भी कराया जाएगा।
5. प्रश्नपत्र से संबधित शोध पत्रों को अध्ययन में शामिल करना होगा, इसके लिए इस प्रश्न पत्र से संबंधित कम से कम दो शोध पत्रों को छात्र–छात्राओं के सन्दर्भ को रूप में समझाया जाए तथा अध्ययन सामग्री में शामिल किया जाए।
6. बाह्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों में पूछे जाने वाले अंक निर्धारण का प्रारूप प्रत्येक पाठ्यक्रम के अंत में दिया गया है। बाह्य परीक्षा के प्रश्न पत्र तदनुरूप रहेंगे। आंतरिक परीक्षाओं में बाह्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों के प्रारूप से विद्यार्थियों का परिचय हो जाना चाहिए।
7. प्रत्येक सेमेस्टर में पंचम प्रश्न पत्र प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र है। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय सेमेस्टर में विद्यार्थी को प्रायोगिकी के विषय दिए जाएंगे जो संबंधित सेमेस्टर से चारों प्रश्नपत्रों के विषयों में से होंगे, प्रायोगिकी का कार्य लिखित रूप में रखना होगा। प्रयोगात्मक प्रश्न पत्र के लिए वर्ष में प्रकाशित साहित्यिक पुस्तकों–पत्रिकाओं, शोध पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख/साहित्यिक गतिविधियों, साहित्यिक संस्थाओं की गतिविधियों पर आलेख/प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग/भाषा विज्ञान एवं राजभाषा के प्रयोग/पत्रकारिता संबंधी विषयों में प्रयोग, शब्दकोश निर्माण संबंधी प्रयोग/अनुवाद संबंधी प्रयोग शामिल होंगे। प्रयोगात्मक गतिविधियों में विद्यार्थी को उक्त में से कम से कम दो गतिविधियों में शामिल रहना होगा तथा संबंधित विषय पर कम से कम 10 पृष्ठों का एक आलेख विभाग में प्रस्तुत करना होगा।
8. प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र संबंधी मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा और प्रायोगिकी संबंधी प्रश्न भी छात्र–छात्राओं से पूछे जाएंगे। प्रायोगिकी हेतु विषय का निर्धारण समयावधि को देखते हुए संबंधित आन्तरिक शिक्षक द्वारा किया जाएगा और समय सारणी में प्रायोगिकी के समय का अन्य प्रश्नपत्रों की भांति निर्धारण होगा और अनिवार्यतः तत्संबंधित विषय पर कक्षाएं कराई जाएगी।

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम प्रथम)
हिन्दी साहित्य का इतिहास

एम0 ए0 हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य तथा हिन्दी पद्य का समेकित अध्ययन करना अपेक्षित है। अध्ययन की इस प्रक्रिया में उन्हें हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विविध विचारधाराओं, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, कवियों तथा उनकी रचनाओं की जानकारी आवश्यक है। साथ ही सभी युगों के नामकरण, काल विभाजन के संदर्भ में कौन–कौन से बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया तथा किन आधारों पर नामकरण किया गया इसकी जानकारी भी होनी चाहिए। इन्हीं सब आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास के पाठ्यक्रम का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई 1

हिन्दी साहित्य के काल विभाजन का आधार, हिन्दी साहित्य के इतिहास के लेखन की परम्परा।

इकाई 2

आदिकाल का विभाजन और नामकरण, आदिकाल की पृष्ठभूमि, नाथ, सिद्ध और जैन साहित्य,

रासो काव्य एवं फुटकर लौकिक साहित्य (विद्यापति, अमीर खुसरो, धनपाल, अब्दुर्रहमान)

इकाई 3

भक्तिकाल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियाँ, भक्ति आंदोलन, भक्तिकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और विशेषताएं, निर्गुण ज्ञानमार्गी संत काव्यधारा, निर्गुण प्रेममार्गी सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्ति काव्य, राम भक्ति काव्य

रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, विशेषताएं, रीतिकालीन कविता का स्वरूप (रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त)

इकाई 4

आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियाँ, विचारधाराएं, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, उत्तर छायावादी कविता, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता

इकाई 5

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य, हिन्दी कथा साहित्य, हिन्दी नाटक साहित्य, हिन्दी आलोचना, निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं (संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज, यात्रावृतान्त)

निबंधात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2 =	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	=	**50 अंक**

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ :– हिन्दी साहित्य का इतिहास

1 इतिहास और साहित्येतिहास – डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
2 साहित्य और इतिहास दृष्टि – मैनेजर पाण्डेय
3 साहित्य का इतिहास दर्शन – डॉ0 नलिन विलोचन शर्मा
4 साहित्येतिहास : संरचना और स्वरूप – डॉ0 सुमन राजे
5 हिन्दी साहित्येतिहास : पाश्चात्य स्रोतों का अध्ययन – डॉ0 हरमहेन्द्र सिंह बेदी
6 हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
7 हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग 1, 2) – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
8 हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
9 हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – आचार्य रामकुमार वर्मा
10 हिन्दी साहित्य का इतिहास (नवीन संस्करण) – डॉ0 नगेन्द्र (संपा0)
11 हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (दो खण्ड) – डॉ0 गणपति चन्द्र गुप्त
12 रासो विमर्श – माता प्रसाद गुप्त
13 हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 मनमोहन सहगल
14 हिन्दी साहित्य का इतिहास – विजयेन्द्र स्नातक
15 हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास (खण्ड 1, 2) – राम प्रसाद मिश्र
16 हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ0 बच्चन सिंह
17 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी
18 हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (भाग 15) – डॉ0 नगेन्द्र (संपा0)
19 आधुनिक हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ0 बच्चन सिंह
20 आधुनिक हिन्दी कविता – डॉ0 हरदयाल
21 दक्खिनी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ0 इकबाल सिंह
22 दक्खिनी हिन्दी का सूफी साहित्य – डॉ0 वी0पी0 मुहम्मद कुंज मेत्तर
23 हिन्दी साहित्य की विश्वयात्रा – सुरेश ऋतुपर्ण (संपा0)
24 हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन – डॉ0 लक्ष्मीनारायण गुप्त
25 हिन्दी काव्य पर आर्यसमाज का प्रभाव – डॉ0 भवानी लाल भारतीय
26 हिन्दी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
27 हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 देवीशरण रस्तौगी
28 हिन्दी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – डॉ0 अवधेश प्रधान
29 भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएं – रामविलास शर्मा
30 आधुनिकता और हिन्दी साहित्य – इन्द्रनाथ मदान
31 आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 बच्चन सिंह
32 नई कविता की मानक कृतियाँ – जीवन प्रकाश जोशी
33 हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल – डॉ0 ईश्वर दत्त शील व डॉ0 आभा रानी
34 हिन्दी कविता के प्रमुख वाद – डॉ0 आदित्य प्रचण्डिया
35 हिन्दी नवजागरण और संस्कृति – शम्भुनाथ
36 हिन्दी वाङ्मय बीसवीं शती – डॉ0 नगेन्द्र (संपा0)
37 स्वातंत्र्योतर हिन्दी साहित्य – बेचन

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम द्वितीय)
प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य

हिन्दी के आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि में अपभ्रंश का बड़ा योगदान है। आदिकालीन काव्य, प्रबंध, मुक्तक आदि अनेक काव्य रूपों में रचा गया है तथा इसकी अभिव्यंजना अपभ्रंश, अवहट्ठ तथा देशी भाषा में की गई है। इस साहित्य ने परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय तथा सक्षम भूमिका का निर्वाह किया है। अतः परवर्ती काल के साहित्य का अध्ययन किए बिना इस काल के साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। पूर्व मध्यकालीन (भक्तिकालीन) साहित्य लोक–जागरण और लोक–मंगल से परिपूरित था। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परम्परा को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उस समय के साहित्य में भाषा तथा कला के सौन्दर्य को परखने तथा समाज और संस्कृति को जानने के लिए आदिकालीन व भक्तिकालीन कविता का अध्ययन आवश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1. चंदबरदायी–पद्मावती समय, संपादितः हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं नामवर सिंह।

इकाई 2. कबीर : कबीर ग्रन्थावली–संपादक, डॉ0 श्यामसुन्दर दास–50 साखियाँ (प्रारम्भिक)

इकाई 3. मलिक मुहम्मद जायसी–पद्मावत–संपादक–आचार्य रामचंद्र शुक्ल
नागमती वियोग खण्ड।
सूरदास – भ्रमरगीत सार – संपादक – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
7, 8, 23, 29, 30, 41, 42, 52, 57, 64, 69, 70, 85, 90, 94, 97, 101, 104, 105, 116, 134, 136, 143, 155, 166, 186, 194, 210, 220, 221।

इकाई 4 तुलसीदास : रामचरित मानस, गीता प्रेस (उत्तरकाण्ड के आरम्भिक 40 दोहे तथा चौपाईयाँ)

इकाई 5 **द्रुतपाठ :–**
विद्यापति, अमीर खुसरो, नानक, गोरखनाथ, मीराबाई, रैदास, कुंभनदास।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित सामान्य प्रश्न होंगे। निबन्धात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	–	2 **X** 7 $^{1}/_{2}$	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 **X** 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 **X** 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 **X** 1	= 10 अंक
योग			**= 50 अंक**

नोट 1 :– व्याख्याएं चंदवरदायी, कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास के चयनित काव्य में से पूछी जाएगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।

2 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ :– प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

1 चंदबरदायी और उनका काव्य – डॉ0 विपिन बिहारी त्रिवेदी
2 पृथ्वीराज रासो का अध्ययन – डॉ0 विजय कुलश्रेष्ठ
3 पृथ्वीराज रासो : भाषा और साहित्य – डॉ0 नामवर सिंह
4 कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
5 कबीर की विचारधारा – गोविन्द त्रिगुणायत
6 कबीर दर्शन – रामजीलाल सहायक
7 कबीर : एक नई दृष्टि – डॉ0 रघुवंश
8 कबीर का रहस्यवाद – डॉ0 रामकुमार वर्मा
9 कबीर का रहस्यवाद – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
10 जायसी ग्रंथावली – आयार्च रामचन्द्र शुक्ल (भूमिका भाग) (संपा0)
11 जायसी और उनका काव्य – डॉ0 शिवसहाय पाठक
12 जायसी – विजय देव नारायण साही
13 पद्मावत में लोक तत्व – डॉ0 रवीन्द्र भ्रमर
14 सूर और उनका साहित्य – डॉ0 हरवंशलाल शर्मा
15 सूर सर्वस्व – प्रभुदयाल मीतल
16 सूर की काव्य साधना – डॉ0 गोविन्द राम शर्मा
17 सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम
18 भ्रमरगीत सार (भूमिका भाग) – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
19 सूर की सांस्कृतिक चेतना और उनका युगबोध – डॉ0 सन्तराम वैश्य
20 तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
21 गोसाई तुलसीदास – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
22 तुलसीदास और उनका युग – डॉ0 राजपत दीक्षित
23 तुलसी काव्य मीमांसा – डॉ0 उदय भानु सिंह
24 दोहा कोश – राहुल सांकृत्यायन
25 सिद्ध साहित्य – डॉ0 धर्मवीर भारती
26 सरहपा और कबीर – कौशलेन्द्र पाण्डे
27 विद्यापति – डॉ0 शिवप्रसाद सिंह
28 विद्यापति – डॉ0 आनन्द प्रकाश दीक्षित
29 विद्यापति ठाकुर – डॉ0 उमेश मिश्र
30 विद्यापति – प्रो0 जनार्दन मिश्र
31 नन्ददास : जीवन और काव्य – भवानी दत्त उप्रेती
32 नन्ददास उनका जीवन और काव्य – सावित्री अवस्थी
33 युग प्रवर्तक संत गुरू रविदास – पृथ्वी सिंह आजाद
34 संत रैदास : कृतित्व, जीवन और विचार – योगेन्द्र सिंह
35 रहीम और उनका काव्य – डॉ0 देशराज सिंह भाटी
36 हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि – डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना
37 हिन्दी संत काव्यों में परम्परा और प्रयोग – डॉ0 भगवान देव पाण्डेय
38 सन्तो राह दुऔ हम दीठा – डॉ0 भगवान देव पाण्डेय (सम्पा0)
39 आदिकालीन हिन्दी साहित्य शोध – हरीश
40 कबीर एक अनुशीलन – डॉ0 रामकुमार वर्मा
41 महाकवि तुलसीदास और युग सन्दर्भ – भगीरथ मिश्र
42 कबीर – विजयेन्द्र स्नातक
43 अमीर खुसरो का हिन्दी काव्य – गोपीचन्द नारंग
44 सन्त रैदास – पद्मावती झुनझुनवाला
45 हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग–1 व 2) – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

46	मीरा ग्रन्थावली	– विद्या निवास मिश्र, गोविन्द रजनीश (सम्पा0)
47	तुलसी सन्दर्भ	– डॉ0 नगेन्द्र
48	भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य	– प्रो0 मैनेजर पाण्डेय
49	तुलसी आधुनिक वातायन से	– रमेश कुन्तल

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम तृतीय)
नाटक और रंगमंच

नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण तथा प्राचीन विधा है। आचार्य भरत के नाट्य चिन्तन से लेकर आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य चिन्तन के प्रसिद्ध चिन्तकों का अध्ययन नाटक के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है। नाटक यथार्थ एवं कल्पना के मेलजोल से विलक्षण रूप धारण कर दृष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन तो प्रदान करता ही है साथ ही साथ अपने साध्य में दृश्य होने के कारण रंगमंच से भी सीधे जुड़ा हुआ है। हिन्दी नाटक में ऐतिहासिकता के साथ–साथ जीवन की विसंगतियाँ और विद्रूपताएं भी दृष्टिगत होती हैं। इन सबको जानने–समझने के लिए इस विधा का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई 1

नाटक तथा रंगमंच का स्वरूप।

नाट्य भेद–भारतीय रूपक–उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)

इकाई 2

नाट्य विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन।

रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग सम्प्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)

रंगमंच–लोक नाट्य (व्यावसायिक, अव्यावसायिक), पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ, नुक्कड़ नाटक।

नाटकों का अध्ययन

इकाई 3	1.	अंधेर नगरी	–	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
	2.	स्कन्दगुप्त	–	जयशंकर प्रसाद
इकाई 4	3.	लहरों के राजहंस	–	मोहन राकेश
	4.	अंधायुग	–	धर्मवीर भारती

इकाई 5 **एकांकी**

प्रकाश और परछाई – विष्णु प्रभाकर

द्रुतपाठ :–

लक्ष्मी नारायण लाल, रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचन्द्र माथुर, सुरेन्द्र वर्मा, शंकर शेष, हबीब तनवीर।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित सामान्य प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	–	2 **X** 7 $^{1}/_{2}$	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 **X** 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 **X** 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 **X** 1	= 10 अंक
योग			**= 50 अंक**

नोट 1 :– इकाई 01, 02 एवं 05 से निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई 03 एवं 04 से व्याख्या एवं निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

2 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना हेगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ :– नाटक और रंगमंच

01 एक कंठ विषपायी – दुष्यन्त कुमार
02 सत्य हरिश्चन्द्र – भारतेन्दु हरिश्चंद्र
03 कोणार्क – जगदीश चन्द्र माथुर
04 आठवां सर्ग – सुरेन्द्र वर्मा
05 चरनदास चोर – हबीब तनवीर
06 संशय की एक रात – नरेश मेहता
07 बकरी – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
08 अंधेर नगरी – भारतेन्दु हरिश्चंद्र
09 स्कन्द गुप्त – जयशंकर प्रसाद
10 लहरों के राजहंस – मोहन राकेश
11 अंधायुग – धर्मवीर भारती
12 प्रकाश और परछाई – विष्णु प्रभाकर
13 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
14 प्रसाद का नाट्य कर्म – डॉ0 सत्येन्द्र कुमार तनेजा
15 प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना – गोविन्द चातक
16 विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ0 राजलक्ष्मी नायडू
17 एकांकी और एंकाकीकार – रामचरण महेन्द्र
18 हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार – डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना
19 हिन्दी एकांकी : समग्र अध्ययन – डॉ0 अब्दुर्रशीद ए0 शेख
20 आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच – लक्ष्मीनारायण लाल
21 नाट्य विमर्श – नर नारायण राय
22 स्तानिस्लव्सकी – भूमिका की तैयारी – आचार्य विश्वनाथ मिश्र
23 स्तानिस्लव्सकी – भूमिका की संरचना – आचार्य विश्वनाथ मिश्र
24 स्तानिस्लव्सकी – रचना की प्रक्रिया – आचार्य विश्वनाथ मिश्र
25 भारतीय नाट्य रंगमंच – आचार्य विश्वनाथ मिश्र
26 हिन्दी नाटक : आज और कल – वीणा गौतम
27 भारतीय और पाश्चात्य नाट्य सिद्धान्त – डॉ0 विश्वनाथ मिश्र
28 दुष्यन्त कुमार – डॉ0 शेर जंग गर्ग
29 अन्धा युग पाठ दर्शन – जयदेव तनेजा
30 गीति नाट्य सिद्धान्त और समीक्षा – डॉ0 शिवशंकर कटारे
31 नाटक का रंग विधान – डॉ0 विश्वनाथ मिश्र
32 मोहन राकेश और उनके नाटक – डॉ0 पट्टण शेट्टी
33 एकांकी और एकांकीकार – रामचरण महेन्द्र
34 हिन्दी नाटक आज और कल – जयदेव तनेजा
35 राष्ट्रीय नवजागरण और प्रसाद के नाटक – डॉ0 इन्दुमति सिंह
36 हिन्दी नाटक आज तक – डॉ0 वीणा गौतम
37 नाटक का समाजशास्त्र – वी0डी0 गुप्ता
38 हिन्दी नाटक में समसामयिक परिवेश – विपिन गुप्त
39 नाट्य संरचना – बाबू राम सिंह 'लमगोड़ा'
40 नाट्यशास्त्र और अभिनय कला – जयदयाल
41 हिन्दी नाटक नई दिशाएं नये प्रश्न – गिरीश रस्तोगी
42 मोहन राकेश और उनके नाटक – गिरीश रस्तोगी
43 हिन्दी नाटक एवं रंगमंच – सं0 नेमिचन्द्र जैन
44 प्रसाद के नाटक – सिद्धनाथ कुमार
45 हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास – डॉ0 दशरथ ओझा
46 नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान – डॉ0 वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम चतुर्थ)

प्रयोजनमूलक हिन्दी

आज हिन्दी का प्रयोग साहित्य, सृजनात्मक लेखन के साथ–साथ कार्यालय, पत्रकारिता, कम्प्यूटर तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी अधिकाधिक हो रहा है। कार्यालयी हिन्दी की संरचना साहित्यिक हिन्दी तथा सृजनात्मक हिन्दी से अलग है। इसी तरह इन्टरनेट तथा अनुवाद में हिन्दी का स्वरूप अलग है। हिन्दी के इन विविध रूपों का अध्ययन करना हिन्दी के आधुनिक स्वरूप को जानने, समझने के लिए आवश्यक है। इस प्रक्रिया में कार्यालयी हिन्दी के औपचारिक लेखन के स्वरूप का अध्ययन अपेक्षित है, साथ ही, अनुवाद के विविध रूप, प्रक्रिया एवं प्रविधि तथा उनके क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

इकाई 1 **कामकाजी हिन्दी** : हिन्दी के विभिन्न रूप–सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, मातृ भाषा, कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, टिप्पण, संक्षेपण, पल्लवन।

इकाई 2 जनसंचार माध्यमों में हिन्दी लेखन, रिपोर्ट–लेखन, संपादकीय, अग्रलेख, लघु टिप्पणियाँ।

इकाई 3 फीचर लेखन, विविध दैनिकों, रेडियो चैनलों, इंटरनेट, मोबाइल, फिल्मों, टीवी चैनलों में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप, जनसंपर्क एवं विज्ञापनों में हिन्दी।

इकाई 4 **हिन्दी कम्प्यूटिंग**

कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब–पब्लिशिंग का परिचय।

इण्टरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इण्टरनेट समय मितव्ययता के सूत्र, वेब–पब्लिशिंग, इण्टरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेटस्केप, लिंक, ब्राउजिंग, ई–मेल भेजना/प्राप्त करना

इकाई 5 **अनुवाद**

अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि, कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद।

अनुवाद का अन्य क्षेत्र : वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विधि, साहित्य, कार्यालयी।

निबंधात्मक प्रश्न 2 **X** 15	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न 5 **X** 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 **X** 1	= 10 अंक
योग	**= 50 अंक**

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ :– प्रयोजनमूलक हिन्दी

1	प्रयोजनमूलक हिन्दी	– विनोद गोदरे
2	प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग	– दंगल झाल्टे
3	टिप्पणी प्रारूप	– शिवनारायण चतुर्वेदी
4	प्रालेखन प्रारूप	– शिवनारायाण चतुर्वेदी
5	राजभाषा विविधा	– माणिक मृगेश
6	व्यावसायिक हिन्दी	– रहमतुल्लाह
7	पत्र–व्यवहार निर्देशिका	– भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ
8	प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन	– भोलानाथ तिवारी
9	व्यावहारिक हिन्दी और स्वरूप	– कृष्ण कुमार गोस्वामी

10	प्रयोजनमूलक हिन्दी	– (संपा0) कृष्ण कुमार गोस्वामी
11	अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा	– सुरेश कुमार
12	भाषा और प्रौद्योगिकी	– (संपा0) गिरिराज किशोर
13	व्यावसायिक हिन्दी	– डॉ0 प्रेमचंद पातंजलि
14	संप्रेषण एवं बैंकिंग व्यवस्था	– डॉ0 सुभाष गौड़
15	अनुवाद प्रक्रिया	– डॉ0 रीता रानी पालीवाल
16	व्यावहारिक हिन्दी	– कैलाशचन्द्र भाटिया
17	बैंकों में प्रयोजनशील हिन्दी	– अनिल कुमार तिवारी
18	व्यावसायिक हिन्दी	– डॉ0 ओम प्रकाश सिंहल
19	साधारण बीमा व्यवसाय में हिन्दी का प्रयोग	– श्रीराम मुंढे
20	कम्प्यूटर और हिन्दी	– डॉ0 हरिमोहन
21	कार्यालय कार्यबोध	– हरिबाबू कंसल
22	व्यावहारिक हिन्दी	– डॉ0 लक्ष्मीकांत पाण्डेय
23	संक्षेपण और विस्तारण	– कैलाशचन्द्र भाटिया
24	प्रयोजनमूलक हिन्दी	– रघुनन्दन प्रसाद शर्मा
25	प्रयोजनमूलक हिन्दी : संरचना एवं अनुप्रयोग	– डॉ0 रामप्रकाश/डॉ0 दिनेश गुप्त
26	प्रशासनिक हिन्दी	– डॉ0 ओम प्रकाश
27	प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिन्दी	– डॉ ओम प्रकाश सिंहल
28	अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं	– भोलानाथ तिवारी/ओमप्रकाश गाबा
29	राजभाषा हिन्दी	– डॉ0 कैलाशचन्द्र भाटिया
30	सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग	– गोपीनाथ श्रीवास्तव
31	प्रशासनिक कार्यालय की हिन्दी	– डॉ0 रामप्रकाश/डॉ0 दिनेश कुमार गुप्त
32	व्यावहारिक हिन्दी	– डॉ0 रवीन्द्रनाथ/डॉ0 भोलानाथ तिवारी
33	व्यावहारिक हिन्दी पत्राचार	– डॉ0 दंगल झाल्टे
34	प्रयोजनमूलक हिन्दी	– कमल कुमार बोस
35	हिन्दी की मानक वर्तनी	– कैलाश चन्द्र भाटिया/रचना भाटिया
36	हिन्दी कार्मिकी	– डॉ0 शंकर शेष, डॉ0 कंचन शर्मा
37	भाषा और प्रौद्योगिकी	– विनोद कुमार प्रसाद
38	नई पत्रकारिता और समाचार लेखन	– सविता चड्ढा
39	पत्रकारिता के सिद्धान्त	– रमेश चन्द्र त्रिपाठी
40	समाचार माध्यम : संगठन एवं प्रबंध	– संजीव भानावत
41	प्रशासनिक हिन्दी : टिप्पण प्रारूपण एवं पत्र लेखन	– डॉ0 हरिमोहन
42	हिन्दी पत्रकारिता : दशा और दिशा	– डॉ0 कैलाश नारद
43	आधुनिक जनसंचार और हिन्दी	– डॉ0 हरिमोहन
44	राजभाषा हिन्दी	– डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया
45	नई पत्रकारिता और समाचार लेखन	– सविता चड्ढा
46	आधुनिक जनसंचार और हिन्दी	– डॉ0 हरिमोहन
47	इलैक्ट्रॉनिक मीडिया	– टी0डी0एस0 आलोक
48	प्रयोजनमूलक कामकाजी हिन्दी	– कैलाश चन्द्र भाटिया
49	रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता	– डॉ0 हरिमोहन
50	जनसंचार माध्यमों में हिन्दी	– चन्द्र कुमार
51	संचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य	– जवरीमल्ल पारख
52	कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग	– विजय कुमार मल्होत्रा
53	सम्पादन कला	– (संपा0) के0 सी0 नारायण
54	अनुवाद कला	– डॉ0 एन0ई0 विश्वनाथ अय्यर
55	आधुनिक विज्ञापन	– प्रेमचन्द पातंजलि
56	सम्पादन कला एवं प्रूफ पठन	– डॉ0 हरिमोहन
57	आधुनिक जनसंचार और हिन्दी	– डॉ0 हरिमोहन
58	भारतीय प्रसारण माध्यम	– डॉ0 कृष्ण कुमार रत्तू
59	इलैक्ट्रानिक मीडिया	– टी0 डी0 एस0 आलोक
60	उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक	– हर्षदेव

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम पंचम)
प्रयोगात्मक

आवश्यक निर्देश –

- पंचम प्रश्नपत्र प्रयोगात्मक है। इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी कम से कम 10 पृष्ठों का एक आलेख विभाग में प्रस्तुत करेगा। जिसकी विषयवस्तु निम्नांकित में से किसी एक पर केन्द्रित होगी।
- सेमेस्टर के चारों प्रश्नपत्रों के किसी भी विषय/साहित्यकार/उनकी रचना पर विशद् समीक्षा।
- साहित्यिक पुस्तकों/शोध पत्र–पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।
- साहित्यिक गतिविधियों/साहित्यिक संस्थाओं की गतिविधियों पर आलेख।
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग/भाषा विज्ञान एवं राजभाषा के प्रयोग पर आलेख।
- पत्रकारिता संबंधी विषयों में प्रयोग/शब्दकोश निर्माण संबंधी प्रयोग।
- अनुवाद संबंधी प्रयोग पर आलेख।
- साहित्यिक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।
- प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र संबंधी मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा और प्रायोगिकी संबंधी प्रश्न भी छात्र–छात्राओं से पूछे जाएंगे। प्रायोगिकी हेतु विषय का निर्धारण समयावधि को देखते हुए संबंधित आन्तरिक शिक्षक द्वारा किया जाएगा और समय सारणी में प्रायोगिकी के समय का अन्य प्रश्नपत्रों की भांति निर्धारण होगा और अनिवार्यतः तत्संबंधित विषय पर कक्षाएं कराई जाएंगी।

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम प्रथम)

उत्तर मध्यकालीन काव्य

जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है। चार पुरूषार्थ में काम का एक स्तम्भ होना गहरे अर्थ की व्यंजना करता है जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े हैं, वैसे ही रति और रीति भी। जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृत्ति है, वहीं 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है। हिन्दी साहित्य का रीतिकाल इन्हीं मनोवृत्तियों से जुड़ा हुआ है। तद्युगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के श्रृंगारिक रूप की संपृक्ति बढ़ी। रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हुआ। जीवन के मधुर पक्ष को भी ठीक से समझने के लिए रीति अथवा श्रृंगारकाल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1 बिहारी	40 प्रारम्भिक दोहे	(बिहारी बोधिनी, संपा0 लाला भगवानदीन)
इकाई 2 घनानंद	25 प्रारम्भिक कवित्त	(घनानंद कवित्त, संपा0 विश्वनाथ प्रताप मिश्र)
इकाई 3 केशवदास	25 प्रारम्भिक कवित्त	(रामचन्द्रिका से)
इकाई 4 भूषण	15 प्रारम्भिक दोहे	(भूषण ग्रंथावली संपा0 डॉ0 भगीरथ दीक्षित)

इकाई 5 द्रुतपाठ

देव, रसखान, सेनापति, पद्माकर, मतिराम, गिरधर कविराय, गुरू गोविंद सिंह।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	–	2 X 7 $^{1}/_{2}$	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 X 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 X 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	= 10 अंक
योग			**= 50 अंक**

<u>नोट 1 :–</u> व्याख्याएँ बिहारी, घनानंद, केशवदास एवं भूषण के चयनित काव्य में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।

2 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– उत्तर मध्यकालीन काव्य

1 संक्षिप्त भूषण – भगवान दास तिवारी
2 हिन्दी रीति साहित्य – भगीरथ मिश्र
3 मध्यकालीन हिन्दी मुक्तक : उद्‌भव और विकास – जितेन्द्रनाथ पाठक
4 देव के काव्य में अभिव्यक्ति विधान एवं समस्त सन्दर्भ ग्रंथ – राज बुद्धिराजा
5 रीति साहित्य की भूमिका – डॉ0 नगेन्द्र
6 बिहारी रत्नाकर – बिहारी
7 घनानंद कवित्त – विश्वनाथ प्रताप मिश्र (संपा0)
8 रामचन्द्रिका – केशवदास
9 मतिराम ग्रंथावली – मतिराम
10 शिवा बावनी – भूषण
11 बिहारी की वाग्विभूति विश्वनाथ प्रताप मिश्र
12 बिहारी : नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह
13 मीरा का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
14 घनानन्द : काव्य और आलोचना – किशोरी लाल
15 केशव का आचार्यत्व – डॉ0 विजयपाल सिंह
16 आचार्य केशवदास – हीरालाल दीक्षित
17 बिहारी का नया मूल्यांकन – डॉ0 बच्चन सिंह
18 घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा – डॉ0 मनोहरलाल गौड़
19 रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना – डॉ0 बच्चन सिंह
20 पद्‌माकर – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
21 महाकवि मतिराम – डॉ0 त्रिभुवन सिंह
22 रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त – डॉ0 सूर्यनारायण द्विवेदी
23 हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
24 रसखान रचनावली : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – विद्यानिवास मिश्र (संपा0)
25 पद्‌माकर कवि – शुकदेव दुबे
26 देव के काव्य में अभिव्यक्ति विधान – राज बुद्धिराज
27 भक्ति काव्य : स्वरूप और संवेदना – डॉ0 रामनारायण शुक्ल
28 घनानंद का काव्य – डॉ0 रामदेव शुक्ल
29 रसखान काव्य और आलोचना – ब्रजभूषण सावलिया
30 बिहारी अनुशीलन – डॉ0 सरोज गुप्ता
31 पद्‌माकर की काव्यभाषा का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 ओंकार नाथ द्विवेदी
32 रीतिमुक्त कवियों का सौदर्यशास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 लक्ष्मण प्रसाद शर्मा

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम द्वितीय)

कथा–साहित्य

हिन्दी गद्य की विधाओं में कहानी एवं उपन्यास सर्वाधिक विकसित तथा लोकप्रिय है। सम्प्रति उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है, अतः इस विधा का विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है।
(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

उपन्यास एवं कहानी का स्वरूप, इतिहास, प्रमुख शैलियाँ, हिन्दी के प्रतिनिधि उपन्यासकारों एवं कहानीकारों का वस्तु शिल्पगत वैशिष्ट्य।

इकाई 2

1. गोदान – प्रेमचंद
2. मैला आंचल – फणीश्वर नाथ 'रेणु'

इकाई 3

1. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'

इकाई 4

हिन्दी कहानी

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (उसने कहा था), जयशंकर प्रसाद (पुरस्कार), प्रेमचन्द (कफन), निर्मल वर्मा (परिन्दे), गिरिराज किशोर (अन्तर्दाह), से0 रा0 यात्री (टापू पर अकेले)।

इकाई 5 द्रुतपाठ

अमृतलाल नागर, श्रीलाल शुक्ल, शैलेश मटियानी, कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डेय, चित्रा मुद्गल, मन्नू भण्डारी।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्याएँ	–	2 X 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 X 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	=	10 अंक
योग	**–**		**=**	**50 अंक**

नोट 01 :– व्याख्याएँ इकाई संख्या 02, 03 एवं 04 से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछे जाएंगे।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– कथा–साहित्य

1. गोदान – प्रेमचंद
2. मैला आंचल – फणीश्वर नाथ 'रेणु'
3. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'
4. शेखर एक जीवनी (भाग 1–2) – अज्ञेय
5. राग दरबारी – श्रीलाल शुक्ल
6. आँवा – चित्रा मुद्गल
7. बूंद और समुद्र – अमृतलाल नागर
8. उसने कहा था (संग्रह –) – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
9. पुरस्कार (संग्रह –) – जयशंकर प्रसाद
10. कफन (संग्रह –) – प्रेमचन्द
11. पत्नी (संग्रह –) – जैनेन्द्र
12. परिन्दे (संग्रह –) – निर्मल वर्मा
13. वापसी (संग्रह –) – उषा प्रियंवदा
14. कथाकार प्रेमचन्द – मनमन्थनाथ गुप्त
15. प्रेमचन्द – डॉ0 सत्येन्द्र
16. प्रेमचन्द – (सम्पादक) सुरेश चन्द्र त्यागी
17. गोदान (पुनर्मूल्यांकन) – गोपाल राय
18. हिन्दी उपन्यास : एक अर्न्तयात्रा – डॉ0 रामदरश मिश्र
19. हिन्दी उपन्यास : समकालीन विमर्श – डॉ0 सत्यदेव त्रिपाठी
20. राष्ट्रीय आन्दोलन और हिन्दी उपन्यास – डॉ0 तेज सिंह
21. भारतीय स्वतन्त्रता और हिन्दी उपन्यास – डॉ0 शशि भूषण सिंघल
22. हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों का नव मूल्यांकन – डॉ0 उदयवीर शर्मा
23. उपन्यासों का उदय – डॉ0 धर्मपाल सरीन
24. मूल्य और हिन्दी उपन्यास – डॉ0 हेमराज कौशिक
25. उपन्यास : स्वरूप और संवेदना – राजेन्द्र यादव
26. गोदान – राजेश्वर गुप्ता
27. हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियां – डॉ0 शशि भूषण सिंघल
28. रागदरबारी : कृति से साक्षात्कार – डॉ0 चन्द्र प्रकाश मिश्र
29. रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 राधा दीक्षित
30. उपन्यास : स्थिति और गति – चन्द्रकान्त बांदिवडेकर
31. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय
32. हिन्दी उपन्यास – डॉ0 शिवनारायण श्रीवास्तव
33. कहानी : नई कहानी – डॉ0 नामवर सिंह
34. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी (संपा0)
35. कहानी आंदोलन की भूमिका – डॉ0 बलराज पाण्डेय
36. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में प्रगतिशीलता – निर्मल कुमारी वार्ष्णेय
37. गोदान : नया परिप्रेक्ष्य – डॉ0 गोपाल राय
38. हिन्दी उपन्यास : पहचान और परख – इन्द्रनाथ मदान (संपा0)
39. आधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य मूल्यों से प्रयाण – शुकन्तला सिन्हा
40. गोदान : आलोचना और आलोचना – डॉ0 इन्द्रनाथ मदान
41. आज की कहानी – विजयमोहन सिंह
42. कहानी : स्वरुप और संवेदना – राजेन्द्र यादव
43. हिन्दी उपन्यास : 1950 के बाद – नित्यानंद तिवारी
44. उपन्यास स्थिति और गति – डॉ0 चन्द्रकान्त वांदिवडेकर
45. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सृजन और आलोचना – डॉ0 चन्द्रकान्त वांदिवडेकर
46. कहानी पाठ और प्रक्रिया – सुरेन्द्र चौधरी

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम तृतीय)

कथेतर गद्य साहित्य

हिन्दी साहित्य की विधाओं में कथा साहित्य एवं नाट्य के अतिरिक्त सृजनधर्मी रचनाकारों द्वारा लिखित अन्य विधाओं का अध्ययन भी अपेक्षित है। यह प्रश्नपत्र इसी कमी को पूरा करता है जिसमें साहित्य की कई नवीन विधाओं का अध्ययन होगा।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

निबंध : श्रद्धा–भक्ति – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
देवदारू – हजारी प्रसाद द्विवेदी
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है – विद्यानिवास मिश्र
निषाद बांसुरी – कुबेरनाथ राय

इकाई 2

व्यंग्य : हरिशंकर परसाई – इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर
शरद जोशी – होना कुछ नहीं का
श्रीलाल शुक्ल – कुत्ते और कुत्ते
रवीन्द्र नाथ त्यागी – एक दीक्षांत भाषण

इकाई 3

रेखाचित्र : दस तस्वीरें – जगदीश चन्द्र माथुर

इकाई 4

घुमक्कड़ शास्त्र – राहुल सांकृत्यायन

इकाई 5 **द्रुतपाठ :**

महावीर प्रसाद द्विवेदी, कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर', पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', डॉ0 नगेन्द्र, ज्ञान चतुर्वेदी, ओम प्रकाश वाल्मीकि।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	–	2 X 7 $^{1}/_{2}$	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 X 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 X 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	= 10 अंक
योग			**= 50 अंक**

नोट 01 :– व्याख्याएँ इकाई संख्या 01 से 04 तक में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त रचनाकारों पर आधारित होंगे।

02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– कथेतर गद्य साहित्य

1 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – (सम्पादक) डॉ0 सुरेश चन्द त्यागी
2 मेरे प्रिय निबन्ध – डॉ0 नगेन्द्र
3 साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएं – डॉ0 कैलाश चन्द भाटिया
4 प्रतिनिधि हिन्दी निबन्धकार – डॉ0 हरिमोहन
5 निबन्धकार हजारी प्रसाद द्विवेदी – उषा सिंघल
6 कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की साहित्य साधना – ओम प्रकाश नायर
7 कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के निबन्ध – डॉ0 के0सी0 गुप्त
8 आधुनिक निबन्ध साहित्य में मनोवैज्ञानिक उद्‌भावनाएं – डॉ0 (श्रीमती) प्रेम सिंह
9 व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की सामाजिक प्रतिबद्धता – संजय शर्मा
10 राहुल सांकृत्यायन – डॉ0 कन्हैयालाल सिंह
11 महापण्डित राहुल सांकृत्यायन – गुणाकर मुले
12 राहुल सांकृत्यायन और प्रगतिशील साहित्य – डॉ0 कैलाश देवी सिंह
13 निर्मल वर्मा की कहानियों का विदेशी परिवेश – डॉ0 सरिता वशिष्ठ
14 सर्जना साहित्यिक निबंध – डॉ0 पीताम्बर सरौदे
15 हिन्दी गद्य विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
16 राहुल का भारत – विष्णु चन्द्र शर्मा
17 हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी
18 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – रामचन्द्र तिवारी
19 साहित्य और समय – डॉ0 अवधेश प्रधान
20 हजारी प्रसाद द्विवेदी – विश्वनाथ त्रिपाठी (संपा0)
21 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व – गणपति चन्द्र गुप्त (संपा0)
22 हिन्दी व्यंग्य का इतिहास – सुभाष चन्दर
23 हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह
24 आधुनिक निबन्ध – कमल शर्मा
25 हिन्दी गद्य के आयाम – डॉ0 वेंकट शर्मा
26 आधुनिक हिन्दी निबंध – डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद मिश्र/डॉ0 मनोज मिश्र
27 अतीत के चलचित्र – महादेवी वर्मा
28 हिन्दी गद्य मीमांसा – रमाकांत त्रिपाठी
29 मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं – रवीन्द्रनाथ त्यागी

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम चतुर्थ)
भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषा विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाईयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतरसंबंधों के विन्यास को आलौकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है अपितु भाषा–विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है। भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

इकाई 1

भाषा और भाषा विज्ञान : भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रायोगिक, विश्व के भाषा परिवार।

इकाई 2

स्वन प्रक्रिया : स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएं, वाग्वयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था– खण्ड्य, खंड्येतर, स्वन–नियम।

अर्थविज्ञान : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, शब्द भेद, अर्थ परिवर्तन, दिशाएं एवं कारण।

इकाई 3

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ–वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ–पालि, प्राकृत–शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण, द्रविड़ परिवार की भाषाओं का सामान्य परिचय।

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियों का सामान्य परिचय। खड़ीबोली, अवधी और ब्रज की ध्वनि और रूप सम्बन्धी विशेषताएँ।

इकाई 4

हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी वर्तनी और उच्चारण के सिद्धान्त। हिन्दी शब्द रचना–उपसर्ग, प्रत्यय, समास।

रूपरचना : लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप।

हिन्दी वाक्य रचना : पदक्रम और अन्विति।

इकाई 5

देवनागरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण।

निबंधात्मक प्रश्न/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2 =	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	**=**	**50 अंक**

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अतिलघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

१ हिन्दी भाषा - कैलाश चन्द्र भाटिया
२ भाषा विवेचन - भगीरथ मिश्र
३ हिन्दी- दशा और दिशा - प्रभाकर श्रोत्रिय
४ भाषा विज्ञान कोश - डॉ० भोलानाथ तिवारी
५ भारतीय भाषा विज्ञान - किशोरी दास वाजपेई
६ हिन्दी की वर्तनी तथा शब्द-विश्लेषण - डॉ० भोलानाथ तिवारी
७ हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ० भोलानाथ तिवारी
८ हिन्दी भाषा की संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
९ हिन्दी व्याकरण - उमेश चन्द्र शुक्ल
१० भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिल देव द्विवेदी
११ हिन्दी भाषा और साहित्य - किरनबाला
१२ भाषा विज्ञान - डॉ० भोलानाथ तिवारी
१३ हिन्दी भाषा - डॉ० भोलानाथ तिवारी
१४ अर्थ विज्ञान - ब्रज मोहन
१५ ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी - राम विलास शर्मा
१६ हिन्दी भाषा की सन्धि संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
१७ हिन्दी भाषा की सामाजिक संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
१८ हिन्दी भाषा की ध्वनि संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
१९ हिन्दी भाषा की लिपि संरचना - डॉ भोलानाथ तिवारी
२० हिन्दी भाषा की शब्द संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
२१ अवधी का विकास - बाबूराम सक्सेना
२२ देवनागरी लेखन तथा हिन्दी वर्तनी व्यवस्था - लक्ष्मी नारायण
२३ आधुनिक भाषा विज्ञान - डॉ० राज मणि शर्मा
२४ हिन्दी भाषा की रूप संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
२५ हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
२६ हिन्दी भाषा की शब्द संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
२७ हिन्दी भाषा की आर्थी संरचना - डॉ० भोलानाथ तिवारी
२८ भाषा विज्ञान - प्रो नरेश मिश्र
२९ हिन्दी भाषा में वर्तनी एवं उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियां एवं उपचार - भंवर लाल नागदा
३० भाषा की उत्पत्ति, रचना और विकास - डॉ० विनोद मणि दिवाकर
३१ भाषा का समाजशास्त्र - राजेन्द्र प्रसाद सिंह
३२ हिन्दी भाषा तथा देवनागरी का इतिहास - ओमप्रकाश शर्मा
३३ हिन्दी भाषा संदर्भ और संरचना - डॉ० त्रिलोचन पाण्डेय
३४ भारतीय आर्य भाषा समस्या - रामविलास शर्मा
३५ हिन्दी और उसकी उपभाषाएं - विमलेश कांति वर्मा
३६ भारत के भाषा परिवार - डॉ० राजमल बोरा
३७ हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास - उदयनारायण तिवारी
३८ भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा - राजनाथ भट्ट
३९ नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी - डॉ० अनंत चौधरी

४०	हिन्दी भाषा के अक्षर तथा शब्द की सीमा	- डॉ० कैलाश चंद्र भाटिया
४१	भारतीय भाषा विज्ञान का सामाजिक धरातल	- शमशेर सिंह नरूला
४२	हिन्दी शब्द समूह का विकास	- डॉ० नरेश मिश्र
४३	भाषा विभाग की भूमिका	- डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा
४४	हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम	- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
४५	आधुनिक भाषा विज्ञान	- डॉ० राजमणि शर्मा
४६	राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएं और समाधान	- आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम पंचम)
प्रयोगात्मक

आवश्यक निर्देश –

- पंचम प्रश्नपत्र प्रयोगात्मक है। इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी कम से कम 10 पृष्ठों का एक आलेख विभाग में प्रस्तुत करेगा। जिसकी विषयवस्तु निम्नांकित में से किसी एक पर केन्द्रित होगी।
- सेमेस्टर के चारों प्रश्नपत्रों के किसी भी विषय/साहित्यकार/उनकी रचना पर विशद् समीक्षा।
- साहित्यिक पुस्तकों/शोध पत्र–पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।
- साहित्यिक गतिविधियों/साहित्यिक संस्थाओं की गतिविधियों पर आलेख।
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग/भाषा विज्ञान एवं राजभाषा के प्रयोग पर आलेख।
- पत्रकारिता संबंधी विषयों में प्रयोग/शब्दकोश निर्माण संबंधी प्रयोग।
- अनुवाद संबंधी प्रयोग पर आलेख।
- साहित्यिक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।
- प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र संबंधी मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा और प्रायोगिकी संबंधी प्रश्न भी छात्र–छात्राओं से पूछे जाएंगे। प्रायोगिकी हेतु विषय का निर्धारण समयावधि को देखते हुए संबंधित आन्तरिक शिक्षक द्वारा किया जाएगा और समय सारणी में प्रायोगिकी के समय का अन्य प्रश्नपत्रों की भांति निर्धारण होगा और अनिवार्यतः तत्संबंधित विषय पर कक्षाएं कराई जाएंगी।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम प्रथम)
आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए हैं। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार सारणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मुकम्मल मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवाहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1	मैथिलीशरण गुप्त	–	साकेत का नवम सर्ग
इकाई 2	जयशंकर प्रसाद	–	कामायनी (श्रद्धा और आनन्द सर्ग)
इकाई 3	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	–	राम की शक्ति पूजा
इकाई 4	सुमित्रानंदन पन्त	–	नौका विहार, परिवर्तन, मौन निमन्त्रण,
	महादेवी वर्मा	–	'यामा' के प्रारम्भिक पाँच गीत

इकाई 5 **द्रुतपाठ** – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

1.	व्याख्याएँ	2 **X** 7 $^{1}/_{2}$	= 15 अंक
2.	निबंधात्मक प्रश्न	1 **X** 15	= 15 अंक
3.	लघु उत्तरीय पश्न	5 **X** 2	= 10 अंक
4.	अति लघूत्तरीय प्रश्न	10 **X** 1	= 10 अंक
		योग	**= 50 अंक**

नोट 01 :– निबंधात्मक प्रश्न एवं व्याख्यान इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछी जाएंगी।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)

1 निराला – रामविलास शर्मा
2 प्रसाद का पूर्ववर्ती काव्य – उषा मिश्र
3 सम्मेलन पत्रिका (राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जन्म शती विशेषांक)–
4 सम्मेलन पत्रिका निराला जन्म शती विशेषांक –
5 महाप्राण निराला समग्र मूल्यांकन – वीरेन्द्र सिंह
6 कामायनी रूपक – डॉ0 विनय
7 महाप्राण निराला – प्रो0 वकील
8 छायावादी काव्य : कुछ नए सन्दर्भ – डॉ0 मृदुला जुगरान
9 प्रसाद निराला और पन्त : छायावाद और उसकी वृहत्त्रयी – विजय बहादुर सिंह
10 साकेत विचार और विश्लेषण – डॉ0 वचन देव कुमार
11 जयशंकर प्रसाद – नंद दुलारे वाजपेयी
12 प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास
13 प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेमशंकर
14 निराला की साहित्य साधना भाग 1, 2, 3, 4 – डॉ0 रामविलास शर्मा
15 क्रान्तिकारी कवि निराला – डॉ0 बच्चन सिंह
16 नवजागरण और छायावाद – डॉ0 महेन्द्रनाथ राय
17 महाकवि निराला – नंद दुलारे वाजपेयी
18 साकेत एक अध्ययन – डॉ0 नगेन्द्र
19 नवम् सर्ग का काव्य वैभव – कन्हैयालाल सहल
20 कामायनी के अध्ययन की समस्याएं – डॉ0 नगेन्द्र
21 छायावाद की प्रासंगिकता – रमेश चन्द्र शाह
22 सुमित्रानंदन पंत – डॉ0 नगेन्द्र
23 भारतेन्दु ग्रन्थावली – ना0 प्र0 सभा काशी
24 भारतेन्दु और उनके सहयोगी – डॉ0 किशोरी लाल गुप्त
25 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – डॉ0 रामविलास शर्मा
26 निराला आत्महंता आस्था – दूधनाथ सिंह
27 पन्त, प्रसाद और मैथिलीशरण – रामधारी सिंह दिनकर
28 क्रान्ति कवि निराला – बच्चन सिंह
29 छायावाद – नामवर सिंह
30 प्रसाद, निराला, अज्ञेय – रामस्वरूप चतुर्वेदी
31 आधुनिक कविता के बदलते प्रतिमान – डॉ0 श्रीनिवास पाण्डेय
32 नवजागरण और छायावाद – डॉ0 महेन्द्रनाथ राय
33 साहित्य और समय – अवधेश प्रधान
34 हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी – नंद दुलारे वाजपेयी
35 महादेवी संचयिता – निर्मला जैन (संपा0)
36 आज के लोकप्रिय कवि बाल कृष्ण शर्मा नवीन – भवानी प्रसाद मिश्र
37 महादेवी वर्मा – शचीरानी गुर्टू
38 महादेवी वर्मा – जगदीश गुप्त
39 नवीन और उनका काव्य – जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव
40 कामायनी एक पुनर्विचार – गजानन माधव मुक्तिबोध

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम द्वितीय)

भारतीय काव्यशास्त्र

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविकता परखी जा सके। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता से समझने और जानने–परखने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है।

इकाई 1

:– काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन।

इकाई 2

अलंकार सिद्धान्त :– अलंकार की अवधारणा, अलंकार सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

रीति सिद्धान्त :– रीति की अवधारणा, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

वक्रोक्ति सिद्धान्त :– वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 3

रस सिद्धान्त :– रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।

इकाई 4

ध्वनि सिद्धान्त :– ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 5

औचित्य सिद्धान्त :– औचित्य की अवधारणा, औचित्य सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

निबंधात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2 =	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	**=**	**50 अंक**

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– भारतीय काव्यशास्त्र

1 भारतीय काव्य विमर्श – राममूर्ति त्रिपाठी
2 हिन्दी साहित्य कोश (प्रथम खण्ड) – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा
3 रस सिद्धान्त – डॉ0 नगेन्द्र
4 काव्यशास्त्र की रूपरेखा – डॉ0 रामदत्त भारद्वाज
5 काव्य दर्पण – डॉ0 जगदीश प्रसाद कौशिक
6 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिमान – डॉ0 जगदीश प्रसाद कौशिक
7 रस सिद्धान्त के विविध आयाम – सम्पादक आनन्द प्रकाश दीक्षित
8 भारतीय काव्यशास्त्र – रामानन्द शर्मा
9 अर्द्धशती का भारतीय काव्य चिन्तन : पक्ष और विपक्ष – राममूर्ति त्रिपाठी

10	अलंकार दर्पण	– डॉ0 नरेश मिश्र
11	भारतीय काव्य सिद्धान्त	– डॉ0 भगीरथ मिश्र
12	रस मीमांसा	– रामचन्द्र शुक्ल
13	रस सिद्धान्त : स्वरुप विश्लेषण	– डॉ0 आनन्द प्रकाश दीक्षित
14	काव्यालोक	– राम दहिन मिश्र
15	ध्वनि सम्प्रदाय और उसके सिद्धान्त	– डॉ0 भोलाशंकर व्यास
16	औचित्य मीमांसा	– राममूर्ति त्रिपाठी
17	अलंकार मुक्तावली	– देवेन्द्र नाथ शर्मा
18	रीति विज्ञान	– विद्या निवास मिश्र
19	शैली विज्ञान और आलोचना की नई भूमिका	– रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव
20	भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	– डॉ0 नगेन्द्र
21	भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज	– राममूर्ति त्रिपाठीं
22	साहित्यशास्त्र	– देश पाण्डेय
23	भारतीय काव्य विमर्श	– राममूर्ति त्रिपाठी
24	साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका	– मैनेजर पाण्डेय
25	रामविलास शर्मा के समीक्षा सिद्धान्त	– डॉ0 माताप्रसाद
26	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास	– पी0 वी0 काणे
27	भारतीय काव्यशास्त्र	– सत्यदेव चौधरी
28	ध्वन्यालोकलोचन	– जगन्नाथ पाठक

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम तृतीय)
विशिष्ट रचनाकार

हिन्दी के उन कालजयी रचनाकारों का अध्ययन करना आवश्यक है, जिन्होंने चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है और जिनका लेखन आज भी प्रासंगिक है। अतः इन रचनाकारों की साहित्यिक दृष्टि को समझना आवश्यक है।

कबीरदास

पाठ्यग्रंथ : (क) कबीर ग्रन्थावली – सं0 डॉ0 श्यामसुन्दर दास

सहायक ग्रंथ :

1 कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी।
2 कबीर दर्शन – रामजीलाल सहायक।
3 कबीर : एक नई दृष्टि – डॉ0 रघुवंश।
4 कबीर का रहस्यवाद – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
5 हिन्दी संत काव्यों में परम्परा और प्रयोग – डॉ0 भगवान देव पाण्डेय।
6 कबीर एक अनुशीलन – डॉ0 रामकुमार वर्मा।
7 कबिरा खड़ा बाजार में – भीष्म साहनी।
8 कबीर का रहस्यवाद – रामकुमार वर्मा।
9 कबीर – सं0 विजयेन्द्र स्नातक।

सूरदास

पाठ्यग्रंथ : सूरसागर – सार (संपूर्ण) – सं0 डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, नवीन संस्करण।

सहायक ग्रंथ :–

1 सूरदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2 सूर–साहित्य – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3 अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय – डॉ0 दीनदयाल गुप्ता।
4 सूर और उनका साहित्य – डॉ0 हरिवंश लाल शर्मा।
5 हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका – डॉ0 रामनरेश वर्मा।
6 सूरदास और कृष्ण भक्ति काव्य – डॉ0 मैनेजर पाण्डेय।
7 सूरदास – नंददुलारे वाजपेयी।
8 हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य – मधुर भाव की उपासना – प्रो0 पूर्णमासी राय।
9 मीरा का काव्य – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
10 मीराबाई – डॉ0 श्रीकृष्ण लाल।
11 भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य – मैनेजर पाण्डेय।

गोस्वामी तुलसीदास

पाठ्यग्रंथ :

1 रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड – संपूर्ण) 326 दोहा)
2 कवितावली – (केवल उत्तरकाण्ड, कुल 183 छंद)
3 विनय पत्रिका – चुने हुए कुल 51 पद (पद संख्या :– 1, 3, 4, 5, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 73, 76, 78, 79, 85, 88, 89, 90, 94, 97, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 111, 113, 114, 115, 121, 124, 155, 156, 158, 159, 160, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 169, 172, 174, 185, 198, 201, 272)।

सहायक ग्रंथ :–

1 गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2 तुलसीदास – डॉ0 माताप्रसाद गुप्त।
3 मानस दर्शन – डॉ0 श्रीकृष्णलाल।
4 तुलसी और उनका युग – डॉ0 राजपति दीक्षित।
5 तुलसी की जीवन भूमि – चन्द्रवलि पाण्डेय।
6 रामकथा का विकास – कामिल बुल्के हिन्दी परिषद्, प्रयाग
7 मानस की रूसी भूमिका (हिन्दी अनुवाद) – वारान्निकोव, विद्यामंदिर, लखनऊ
8 सन्त तुलसीदास और उनका संदेश – डॉ0 राजपति दीक्षित।
9 गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और उसका महत्व – डॉ0 ज्ञानवती त्रिवेदी।
10 लोकवादी तुलसी – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
11 तुलसीदास – ग्रियर्सन।
12 तुलसी – उदयभानु सिंह
13 तुलसी सन्दर्भ – डॉ0 नगेन्द्र

जयशंकर प्रसाद

पाठ्य ग्रंथ :

1 कामायनी (सम्पूर्ण)
2 ध्रुवस्वामिनी
3 कहानी : आकाशदीप, गुंडा, देवरथ।
4 काव्य कला तथा छायावाद और यथार्थ (प्रथम निबन्ध और अन्तिम निबन्ध)

सहायक ग्रंथ :–

1 जयशंकर प्रसाद – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।
2 नया साहित्य : नये प्रश्न – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।
3 जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला – डॉ0 रामेश्वर खण्डेलवाल।
4 प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास।
5 प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेमशंकर।
6 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।
7 प्रसाद के जीवन और साहित्य – डॉ0 रामरतन भटनागर।
8 हिन्दी नाटक – डॉ0 बच्चन सिंह।
9 प्रसाद का गद्य साहित्य – डॉ0 राजमणि शर्मा।
10 प्रसाद : दुखान्त नाटक – रामकृष्ण शुक्ल श्रीमुख।
11 नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान – डॉ0 वशिष्ठनागर त्रिपाठी।
12 प्रसाद साहित्य में अतीत चिन्तन – डॉ0 धर्मपाल कपूर
13 कामायनी का पुनर्मूल्याकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
14 प्रसाद साहित्य सर्जना के आयाम – माधरी सुबोध (संपादक)
15 प्रसाद सन्दर्भ – प्रमिला शर्मा (संपादक)

प्रेमचंद

(क) रंगभूमि (ख) प्रेमाश्रम
(ग) गबन (घ) मानसरोवर (खण्ड एक)

सहायक ग्रंथ

1 प्रेमचंद – घर में – शिवरानी देवी।
2 प्रेमचंद : एक विवेचन – इन्द्रनाथ मदान।

3 प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा।
4 प्रेमचंद : कलम का सिपाही –अमृतराय।
5 प्रेमचंद – मदनगोपाल
6 प्रेमचंद : जीवन, कला एवं कृतित्व – हंसराज रहबर।
7 प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन – नंददुलारे वाजपेयी।
8 कथाकार प्रेमचंद – मन्मथनाथ गुप्त।
9 प्रेमचंद : एक अध्ययन – राजेश्वर गुरु।
10 प्रेमचंद की उपन्यास कला – जनार्दन प्रसाद राय।
11 प्रेमचंद एवं भारतीय किसान – रामवक्ष।
12 प्रेमचंद : गंगा प्रसाद विमल।
13 प्रेमचंद के साहित्य सिद्धान्त – नरेन्द्र कोहली।
14 प्रेमचंद : एक कला व्यक्तित्व – जैनेन्द्र।
15 प्रेमचंद स्मृति – सं0 अमृतराय।
16 प्रेमचंद : चिंतन और कला – सं0 इन्द्रनाथ मदान।
17 प्रेमचंद और गोर्की – श्री मधु।
18 हिन्दी उपन्यास : विशेषतः प्रेमचंद : नलिन विलोचन शर्मा।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

पाठ्य ग्रंथ : 1 शेखर एक जीवनी (भाग 1, 2), 2 आंगन के पार द्वार, 3 अज्ञेय की प्रतिनिधि कहानियाँ (संपा0 कृष्ण दत्त पालीवाल)।

सहायक ग्रंथ :–

1 अज्ञेय का कथा साहित्य – ओम प्रभाकर।
2 अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि – सत्यपाल चुघ।
3 अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
4 शिखर से सागर तक – डॉ0 रामकमल राय।
5 अज्ञेय और नयी कविता – डॉ0 चन्द्रकला त्रिपाठी।
6 अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम – डॉ0 नवीन चन्द्र लोहनी।
7 अज्ञेय कवि और काव्य – डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद
8 अज्ञेय का कवि कर्म – कृष्णदत्त पालीवाल
9 अज्ञेय का काव्य भाव और शिल्प – डॉ0 शंकर बसंत मुद्‌गल
10 आज के लोकप्रिय कवि अज्ञेय – विद्यानिवास मिश्र
11 अज्ञेय एक अध्ययन – भोला भाई पटेल
12 अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ0 पुष्पा शर्मा

व्याख्या	–	2 **X** 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 **X** 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 **X** 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 **X** 1	=	10 अंक
योग			=	**50 अंक**

नोट 01 :– विशेष चयन के रूप में एक साहित्यकार का साहित्य पढ़ा जाएगा।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– विशिष्ट रचनाकार

1 भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य – मैनेजर पाण्डे
2 महाकवि सूरदास – आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
3 प्रसाद सन्दर्भ – सम्पादक : प्रमिला शर्मा
4 प्रसाद साहित्य : सर्जना के आयाम – सम्पादक : माधुरी सुबोध
5 गोस्वामी तुलसीदास – सम्पादक : रामचन्द्र शुक्ल
6 तुलसीदास – डॉ0 माताप्रसाद गुप्त
7 तुलसी और उनका युग – डॉ0 राजपति दीक्षित
8 तुलसी सन्दर्भ – डॉ0 नगेन्द्र
9 तुलसी – उदय भानु सिंह
10 जयशंकर प्रसाद – नन्द दुलारे वाजपेयी
11 कामायनी का पुनर्मूल्यांकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
12 अज्ञेय कवि और काव्य – राजेन्द्र प्रसाद
13 अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम – प्रो0 नवीन चन्द्र लोहनी
14 अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प विधि – डॉ0 सत्यपाल
15 अज्ञेय का काव्य – भाव एवं शिल्प – डॉ0 शंकर बसंत मुद्‌गल
16 आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : अज्ञेय – विद्यानिवास मिश्र
17 अज्ञेय : एक अध्ययन – भोला भाई पटेल
18 अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ0 पुष्पा शर्मा
19 कामायनी रूपक – डॉ0 विनय
20 कबीर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
21 नदी के द्वीप में वैयक्तिक स्वच्छंदतावाद – आशा अरोरा
22 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
23 प्रसाद साहित्य में अतीत चिन्तन – डॉ0 धर्मपाल कपूर

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम चतुर्थ)
पत्रकारिता प्रशिक्षण

पत्रकारिता आज जीवन–समाज की धड़कन बन गई है। सिमटते विश्व में स्नायु–तंतुओं के समान काम कर रही है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मिडिया, इलैक्ट्रॉनिक मिडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। इसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। साहित्यिकता के साथ–साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है। पुनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है। अतः इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

इकाई 1 **प्रिन्ट पत्रकारिता**

पत्रकारिता का स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार,

हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास।

समाचार के मूल तत्व, समाचार के विभिन्न स्रोत।

संपादन कला के सामान्य सिद्धांतः शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार प्रस्तुतीकरण।

दृश्य सामग्री–कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स की व्यवस्था एवं फोटो पत्रकारिता।

इकाई 2

पत्रकारिता से संबंधित लेखन : संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, पुस्तक समीक्षा, खोजी समाचार।।

इकाई 3 **इलैक्ट्रोनिक पत्रकारिता**

इलैक्ट्रोनिक मीडिया का उद्‌भव एवं विकास

इलैक्ट्रोनिक मीडिया की पत्रकारिता :–

1. रेडिया की पत्रकारिता :– समाचार बुलेटिन सम्बन्धी सिद्धान्त, उनकी तकनीक, रेडियो बुलेटिनों के प्रकार।

2. टेलीविजन में समाचार संकलन, संपादन, प्रस्तुतीकरण।

3 इण्टरनेट की पत्रकारिता

इकाई 4

समाचार संकलन तकनीक :– 1. साक्षात्कार, 2. प्रेसवार्ता, 3. संसदीय रिपोर्टिंग, 4. विधि समाचार,

5. खेल समाचार, 6. भाषणों, बैठकों संगोष्ठियों आदि के समाचार तथा प्रेस विज्ञप्तियाँ 7. दुर्घटनाओं, आपदाओं, अपराधों की रिपोर्टिंग, खोजी पत्रकारिता, 8. एंकरिंग तकनीक

इकाई 5

रेडियो एवं टेलीविजन की तकनीक एवं उपकरण :–

1. माइक्रोफोन, रिकार्डर, मिक्सर, विडियो, कैमरा, प्रकाश संबंधी यंत्र/एनीमेशन और मल्टीमीडिया

निबंधात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2 =	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
कुल योग	=	50 अंक

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– पत्रकारिता प्रशिक्षण

1 पत्रकारिता इतिहास और प्रश्न – कृष्ण बिहारी मिश्र
2 पत्रकारिता की चुनौतियां – गणेश मंत्री
3 भारतीय पत्रकारिता : कल आज और कल – सुरेश गौतम
4 हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार – ठाकुर दत्त आलोक
5 पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य – राजकिशोर
6 उत्तरआधुनिक मीडिया तकनीक – हर्ष देव
7 प्रसार भारती प्रसारण नीति – सुधीश पचौरी
8 हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और सन्दर्भ – विनोद गोदरे
9 हिन्दी पत्रकारिता : कल आज और कल – सुरेश गौतम
10 मीडिया का यथार्थ – डॉ0 रतन कुमार पाण्डे
11 सिनेमा : कल आज और कल – विनोद भारद्वाज
12 हिन्दी पत्रकारिता और राजभाषा विमर्श – शशि नारायण
13 आज की दुनियाँ में सूचना पद्धति – मार्क पोस्टर
14 पत्रकारिता सन्दर्भ कोश – राम प्रकाश
15 टेलीविजन प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक रूप – दीपू राय
16 साहित्यिक पत्रकारिता – ज्योतिष जोशी
17 आर्थिक पत्रकारिता – भरत झुनझुनवाला
18 हिन्दी पत्रकारिता : आधुनिक सन्दर्भ – देव प्रकाश मिश्र
19 नवजागरणकालीन पत्रकारिता (भाग–1 व 2) – सम्पादित कृष्ण दत्त शर्मा
20 रेडियो प्रसारण – कौशल शर्मा
21 मीडिया विमर्श – रामशरण जोशी
22 मीडिया की परख – सुधीश पचौरी
23 दूरदर्शन विकास से बाजार तक – सुधीश पचौरी
24 पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण – अरविन्द मोहन
25 21वीं सदी और हिन्दी पत्रकारिता : अन्तरंग पहचान – अमरेन्द्र निशान्त
26 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सिद्धान्त – रूपचन्द गौतम
27 सम्पादन कला एवं प्रूफ पठन – डॉ0 हरीमोहन
28 पत्रकारिता एवं सम्पादन कला – एन0सी0 पंथ
29 पत्रकारिता : मिशन से मीडिया तक – अखिलेश मिश्र
30 सूचना प्रौद्योगिकी एवं पत्रकारिता – अशोक मलिक
31 टेलीविजन पत्रकारिता – ओमकार चौधरी
32 पत्रकारिता प्रशिक्षण – डॉ0 राजेन्द्र मिश्र/राकेश शर्मा
33 इन्टरनेट पत्रकारिता – सुरेश कुमार
34 टेलीविजन लेखन – असगर वजाहत
35 फीचर लेखन : स्वरूप और शिल्प – डॉ0 मनोहर प्रभाकर
36 समकालीन पत्रकारिता : मूल्यांकन और मुद्दे – राजकिशोर
37 खेल पत्रकारिता – सुशील दोसी/सुरेश कौशिक
38 लोकतन्त्र और पत्रकारिता – सम्पादक अमर सिंह वधान
39 भेंटवार्ता और प्रेस कॉन्फ्रेंस – डॉ0 नन्द किशोर तिरखा

40	समाचार पत्र प्रबन्धन	– गुलाब कोठारी
41	भूमण्डलीकरण और मीडिया	– कुमुद शर्मा
42	बातचीत की कला	– मानवती आर्या/कृष्ण चन्द्र आर्या
43	पत्रकारिता की विभिन्न विधाएं	– डॉ0 निशान्त सिंह
44	कैरियर पत्रकारिता	– रूप चन्द गौतम
45	फिल्म पत्रकारिता	– डॉ0 मनोज पटौदिया

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम पंचम)
प्रयोगात्मक

आवश्यक निर्देश –

- पंचम प्रश्नपत्र प्रयोगात्मक है। इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी कम से कम 10 पृष्ठों का एक आलेख विभाग में प्रस्तुत करेगा। जिसकी विषयवस्तु निम्नांकित में से किसी एक पर केन्द्रित होगी।
- सेमेस्टर के चारों प्रश्नपत्रों के किसी भी विषय/साहित्यकार/उनकी रचना पर विशद् समीक्षा।
- साहित्यिक पुस्तकों/शोध पत्र–पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।
- साहित्यिक गतिविधियों/साहित्यिक संस्थाओं की गतिविधियों पर आलेख।
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग/भाषा विज्ञान एवं राजभाषा के प्रयोग पर आलेख।
- पत्रकारिता संबंधी विषयों में प्रयोग/शब्दकोश निर्माण संबंधी प्रयोग।
- अनुवाद संबंधी प्रयोग पर आलेख।
- साहित्यिक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।
- प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र संबंधी मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा और प्रायोगिकी संबंधी प्रश्न भी छात्र–छात्राओं से पूछे जाएंगे। प्रायोगिकी हेतु विषय का निर्धारण समयावधि को देखते हुए संबंधित आन्तरिक शिक्षक द्वारा किया जाएगा और समय सारणी में प्रायोगिकी के समय का अन्य प्रश्नपत्रों की भांति निर्धारण होगा और अनिवार्यतः तत्संबंधित विषय पर कक्षाएं कराई जाएंगी।

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम प्रथम)

छायावादोत्तर काव्य

छायावादी कृतित्व में यथार्थ और स्वप्न दोनों की समान संस्थिति थी। राष्ट्रीय-चेतना और सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति अपनी समस्त शक्ति-सामर्थ्य तथा कतिपय नवीन प्रयोगवादिता के साथ छायावादोत्तर-काव्य में विकसित होती रही। यहाँ प्रयोग और प्रगतिशीलता के स्वर जोर पकड़ते गए जिसके बीज-बिन्दु छायावाद में पड़ चुके थे। औद्योगीकरण के साथ-साथ शोषण की वृत्ति तथा अन्य सामाजिक विद्रूपताओं ने प्रगतिशील साहित्यांदोलनों को बढ़ावा दिया। नये मार्ग की अन्वेषी विचारधारा ने प्रयोगवादी काव्यधारा के रूप में अपने को विकसित किया। स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया। स्वप्न अधूरे रहे, संकल्प टूटे, आक्रोश और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित हुई। विज्ञान ने बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरूप नये-नये बिंब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना-रूप विकसित हुए। अंतर्विरोधी स्थितियों ने मूल्य-विघटन, तनाव-संक्रमण, मोहभंग की स्थिति पैदा की, जिसकी अभिव्यंजना विविध रूपों में हुई। वर्तमान समस्याओं, संवेदनाओं की व्यापकता विश्वजनीन हो गई है। इस वैश्विक-संदर्भ की जानकारी और समझदारी के लिए छायावादोत्तर तथा समकालीन साहित्य का विशेष अध्ययन परमावश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

छायावादोत्तर कालावधि –राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का काव्य, व्यक्तिवादी काव्य, हालावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता, नवगीत, अकविता, जनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद

इकाई 2 प्रमुख कवि तथा उनकी काव्य प्रवृत्तियाँ। युगबोध एवं शिल्प के नए आयाम।

इकाई 3 अज्ञेय – असाध्य वीणा, कलगी बाजरे की, नदी के द्वीप, बावरा अहेरी।
मुक्तिबोध – अंधेरे में।

इकाई 4 नागार्जुन – कालिदास, बहुत दिनों के बाद, अकाल और उसके बाद।
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – कुआनो नदी, जंगल का दर्द, एक सूनी नाव, बांस का पुल।

इकाई 5 द्रुतपाठ :–

केदारनाथ अग्रवाल, रघुवीर सहाय, सुदामा पाण्डेय 'धूमिल',दुष्यन्त कुमार, धर्मवीर भारती, , भारत भूषण, लीलाधर जगूड़ी, कुँअर बेचैन।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्याएँ	–	2 X 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 X 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	=	10 अंक
योग	–			50 अंक

नोट 01 :– व्याख्याएं इकाई 03 एवं 04 से पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01 से 04 तक पूछे जाएंगे।

02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– छायावादोत्तर काव्य

1 रघुवीर सहाय का कविकर्म – डॉ0 सुरेश शर्मा
2 धूमिल और उनका काव्य संघर्ष – डॉ0 ब्रह्मदेव मिश्र
3 आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि नागार्जुन – संपादक प्रभाकर माचवे
4 नयी कविता की मानक कृतियाँ – जीवन प्रकाश जोशी
5 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी मिथक काव्य : युगीन सन्दर्भ – सविता गौड़
6 मार्क्सवाद और काव्य – शिव कुमार मिश्र
7 तार सप्तक के कवियों की समाज–चेतना – राजेन्द्र कुमार
8 नागार्जुन – सुरेश चन्द्र त्यागी (संपादक)
9 नई कविता का आत्म संघर्ष – मुक्तिबोध
10 आधुनिक कवियों की दार्शनिक पृष्ठभूमि – डॉ0 राजाराम सोनी
11 नयी कविता पुराख्यान और समकालीनता – डॉ0 एस0ए0 सूर्य नारायण वर्मा
12 समकालीन कविता के सरोकार – डॉ0 गुरूचरण सिंह
13 समकालीन हिन्दी कविता और लीलाधर जगूड़ी – डॉ0 शर्मिला सक्सेना
14 नागार्जुन का काव्य : एक पड़ताल – श्री भगवान तिवारी
15 कविता की नयी अवधारणा – डॉ0 राजेन्द्र मिश्र
16 हिन्दी की प्रगतिशील कविता स्वरूप और प्रतिमान – डॉ0 मृत्युंजय उपाध्याय
17 समकालीन हिन्दी कविता की संवेदना – डॉ0 गोविन्द रजनीश
18 नागार्जुन – डॉ0 प्रभाकर माचवे

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम द्वितीय)
पाश्चात्य काव्यशास्त्र

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए पाश्चात्य काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इससे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविकता परखी जा सके। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जाँचने-परखने के लिए पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है।

इकाई 1

प्लेटो – काव्य सिद्धान्त।

अरस्तू –अनुकरण सिद्धान्त, विरेचन सिद्धान्त।

इकाई 2

लोंजाइनस –उदात्त की अवधारणा।

आई0ए0 रिचर्डस – संवेगों का सन्तुलन।

इकाई 3

कॉलरिज –कल्पना सिद्धान्त।

क्रोचे –अभिव्यंजनावाद।

इकाई 4

टी0एस0 इलियट – निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त।

मार्क्स और फ्रायड का साहित्य चिंतन

इकाई 5

संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद।

निबंधात्मक प्रश्न	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	=	10 अंक
योग		**=**	**50 अंक**

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना हेागा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1	व्यावहारिक आलोचना	– कृपाशंकर सिंह/जगन सिंह
2	पाश्चात्य साहित्य चिन्तन	– निर्मला जैन/कुसुम बांठियां
3	हिन्दी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार	– कृष्ण दत्त पालीवाल
4	उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श	– सुधीश पचौरी
5	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	– देवन्द्र नाथ शर्मा
6	नई समीक्षा के प्रतिमान	– डॉ0 निर्मला जैन
7	पाश्चात्य साहित्यशास्त्र	– डॉ0 रामपूजन तिवारी
8	पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र : सिद्धान्त और परिदृश्य	– डॉ0 नगेन्द्र
9	आलोचक और आलोचना	– बच्चन सिंह

10	आलोचना के बदलते मानदंड और हिन्दी साहित्य	– डॉ0 शिवकरण सिंह
11	पाश्चात्य साहित्य चिन्तन	– निर्मला जैन/कुसुम बांठियां
12	पाश्चात्य काव्यशास्त्र इतिहास सिद्धान्त और वाद	– डॉ0 भगीरथ मिश्र
13	पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र	– डॉ0 शांतिगोपाल पुरोहित
14	पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास	– डॉ0 तारकनाथ बाली
15	अरस्तू का काव्यशास्त्र	– डॉ0 नगेन्द्र (संपा0)
16	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	– अशोक के0 शाह
17	अरस्तू का त्रासदी विवेचन	– डॉ0 देवदत्त कौशिक
18	काव्य में उदात्त तत्व	– डॉ0 नगेन्द्र (संपा0)
19	रिचर्ड्स के आलोचना सिद्धान्त	– डॉ0 शम्भुदत्त झा

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम तृतीय –क)
विशिष्ट साहित्य–धारा (भारतीय साहित्य)

भारतीय भाषाओं में हिन्दी साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओ की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए हिन्दी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिन्दी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है।

इकाई 1

भारतीय साहित्य की परिधि, भारतीय साहित्य में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति तथा भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता

इकाई 2

'हिन्दी और बंगला' साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

इकाई 3

मालंच (अनुवाद –नीरजा/फुलवारी) – रवीन्द्रनाथ ठाकुर (बंगला)

इकाई 4

हयवदन – गिरीश कर्नाड (कन्नड)

इकाई 5द्रुतपाठ

कालिदास (संस्कृत), सुंदररामास्वामी (तमिल), के0 जी0 शंकर पिल्लै (मलयालम), पाश (पंजाबी), विजय तैंदुलकर – मराठी, जसमा ओड़न – गुजराती, पद्मा सचदेव – (डोगरी)

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

निबंधात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2 =	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	=	**50 अंक**

नोट 01 :– इकाई संख्या 01 से 04 तक केवल निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– विशिष्ट साहित्य–धारा (भारतीय साहित्य)

1	भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं	– परशुराम चतुर्वेदी
2	आधुनिक भारतीय चिंतन	– डॉ0 विश्वनाथ नरवणे
3	भारतीय चिंतन परम्परा	– के0 दामोदरन
4	भारतीय साहित्य के इतिहास की परम्पराएँ	– डॉ0 रामविलास शर्मा
5	भारतीय साहित्य	– डॉ0 नगेन्द्र
6	सूफीमत : साधना और साहित्य	– डॉ0 बलदेव उपाध्याय
7	भागवत सम्प्रदाय	– डॉ0 बलदेव उपाध्याय
8	भारतीय दर्शन	– डॉ0 बलदेव उपाध्याय
9	संस्कृत साहित्य का इतिहास	– डॉ0 बलदेव उपाध्याय
10	भारतीय साहित्य	– डॉ0 भोला शंकर व्यास
11	भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	– ब्रजेश्वर शर्मा
12	भारतीय काव्यशास्त्र	– योगेन्द्र प्रताप सिंह
13	भारतीय साहित्य	– संपादक नगेन्द्र
14	आज का भारतीय साहित्य	– साहित्य अकादमी प्रकाशन
15	साहित्य और संस्कृति	– अमृतलाल नागर
16	राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य	– वीरभारत तलवार
17	विश्व साहित्य शास्त्र	– डॉ0 नगेन्द्र (संपादक)
18	भारतीय भाषाएं और राष्ट्रीय अस्मिता	– मुकुन्द द्विवेदी (संपादक)
19	प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा	– अशोक केलकर

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम तृतीय–ख)
विशिष्ट साहित्य–धारा (कौरवी लोक साहित्य)

हिन्दी जगत में विद्यमान विभाषाओं में अमूल्य कौरवी साहित्य संपदा विद्यमान है। इसके संकलन संपादन सर्वेक्षण, प्रकाशन द्वारा ही अपनी मूल राष्ट्रीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है और हिन्दी का जनाधार बढ़ाया जा सकता है अस्तु, इसके अध्ययन की उपयोगिता निर्विवाद है।

इकाई 1

लोक संस्कृति : अवधारणा, लोकधर्म, लोकनीति तथा लोकमानस,
लोक जीवन : लक्षण और विधान।

इकाई 2

लोक साहित्य : अवधारणा, लोक साहित्य के रूप, परिचय, प्रकार – लोकगीत, लोककथाएं, लोकनाट्य (स्वांग), लोकगाथाएं आदि।

कौरवी : परिचय, क्षेत्र तथा सीमाएं, कौरवी की प्रवृत्तियाँ, तथा उच्चारणगत विशेषताएं, कौरवी के प्रमुख रचनाकार तथा उनकी रचनाएं।

इकाई 3

पाठ्य ग्रन्थ : गामेल्लभास (दोहा–संग्रह) – डॉ0 कृष्णचन्द्र शर्मा, लोकदीप प्रकाशन मेरठ, प्रारंभिक 50 दोहे।
लोक जीवन के स्वर (गीत–संग्रह) – कुरूलोक संस्थान, रामवाटिका, शिवाजी मार्ग, मेरठ – सावन के गीत, टेहले के गीत (प्रारंभिक 25), धार्मिक गीत (05)।

इकाई 4

सतलड़ा (एकांकी–संग्रह) – कुरूलोक संस्थान, मेरठ
लोग : गिरिराज किशोर, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

इकाई 5 **द्रुतपाठ –**

गंगादास, शंकरदास, घीसाराम, मटरूलाल अत्तार, पृथ्वीसिंह बेधड़क, शोभाराम प्रेमी, चन्दर बादी, पं हरिवंश लाल, उस्ताद बुनियाद अली

व्याख्याएं	2 X 7 1/2	=	15 अंक
निबंधात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	1 X 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	=	10 अंक
योग		**=**	**50 अंक**

नोट 01 :– इकाई संख्या 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। व्याख्या केवल इकाई 03 (गामेल्लभास (दोहा–संग्रह), लोक जीवन के स्वर (गीत–संग्रह)) से ही पूछी जाएगी।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना हेगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– विशिष्ट साहित्य–धारा (कौरवी लोक साहित्य)

1 मयराष्ट्र मानस – डॉ0 कृष्ण चन्द्र शर्मा (संपादक)
2 खड़ी बोली की साहित्यिक विधाएं एवं रचनाकार (सन्दर्भ : मेरठ मंडल) – प्रो0 नवीन चन्द्र लोहनी
3 कौरवी लोक साहित्य, भावना प्रकाशन नई दिल्ली – प्रो0 नवीन चन्द्र लोहनी
4 लोकवार्ता विज्ञान (भाग 1 व 2) – डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा
5 लोक जीवन के स्वर – डॉ0 कृष्णचन्द्र शर्मा
6 लोक साहित्य – डॉ0 सुरेश चन्द्र त्यागी (संपादक)
7 कौरवी शब्द कोश– डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा/डॉ0 कृष्णचन्द्र शर्मा/डॉ0 चन्द्रपाल शर्मा
8 संत गंगादास और उनका काव्य – डॉ0 ब्रजपाल सिंह संत/डॉ0 जगन्नाथ शर्मा 'हंस'
9 कुरू भारती (बोली अंक) – डॉ0 कृष्ण चन्द्र शर्मा (संपादक)
10 कुरू भारती (लोककथा अंक) – डॉ0 कृष्ण चन्द्र शर्मा (संपादक)
11 राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन अभिनन्दन ग्रंथ –
12 लोक साहित्य – सुरेश चन्द्र त्यागी (संपादक)
13 लोक साहित्य : स्वरूप और मूल्याकंन – डॉ0 श्रीराम शर्मा
14 लोक साहित्य – बाबू राव देसाई
15 कौरवी लोक साहित्य – डॉ0 सुरेश चन्द्र शर्मा, पंकज
16 लोक भाषा – डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया
17 ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन – डॉ0 सत्येन्द्र
18 लोक साहित्य – इन्द्रदेव सिंह
19 लोक साहित्य – डॉ0 इन्दु यादव
20 लोक साहित्य विज्ञान – डॉ0 सत्येन्द्र
21 खड़ी बोली का लोक साहित्य – डॉ0 सत्यागुप्त
22 अवधी लोक साहित्य – डॉ0 सरोजनी रोहतगी
23 कन्नौजी लोक साहित्य – डॉ0 संतराम अनिल
24 हिन्दी का प्रादेशिक लोक साहित्यशास्त्र – डॉ0 नन्दलाल कल्ला
25 लोक साहित्य और संस्कार संस्कृति – जयनारायण कौशिक
26 लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 छोटेलाल बहरदार
27 राजस्थानी लोकनाट्य – डॉ0 सोहनदान चारण
28 लोक साहित्य का शास्त्रीय अनुशीलन – डॉ0 महेश गुप्त
29 लोक संस्कृति और लोक साहित्य – डॉ0 जयनारायण कौशिक
30 कौरवी प्रदेश की लोक संस्कृति – डॉ0 कविता त्यागी
31 खड़ीबोली का लोक साहित्य – डॉ0 सत्या गुप्ता
32 भाषा का लोकपक्ष – डॉ0 रामस्वार्थ ठाकुर
33 लोक संस्कृति के शिखर – सविगी परमार
34 लोकोक्ति कोश – हरिवंश राय शर्मा
35 उत्तर मध्य क्षेत्र की लोक संस्कृति – जयप्रकाश राय/डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम तृतीय–ग)
विशिष्ट साहित्य–धारा (प्रवासी हिन्दी साहित्य)

इकाई 1

भारतवंशी समाज, प्रवासी हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, प्रवासी हिन्दी साहित्य की प्रमुख रचनाएं/विधाएं, प्रवासी हिन्दी साहित्य की विशेषताएं, परिभाषा, संसर्ग से नई शब्दावली, व्याकरण के नये रूप ।

इकाई 2 **उपन्यासकार** **उपन्यास**

हवन – सुषम बेदी

इकाई 3

कवि		**कविता**
ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर (मॉरीशस)	–	महात्मा गांधी की जय
वेद प्रकाश 'वटुक' (अमेरिका)	–	होली के रंग
डॉ0 विजय कुमार मेहता	–	न्यू यॉर्क
डॉ0 पद्मेश गुप्ता	–	बर्लिन दीवार/माथे की शिकन/सजा
सत्येन्द्र श्रीवास्तव (ब्रिटेन)	–	बार–बार भारत
कमला प्रसाद मिश्र (फीजी)	–	क्या मैं परदेसी हूँ
अचला शर्मा	–	परदेश में बसंत की आहट
मार्तिन हरिदत्त लछमन (सूरीनाम)	–	वृक्ष की टहनी पर
हरिशंकर आदेश	–	कहे पुकार के

इकाई 4

कहानी	**कहानीकार**	**कहानी**	**कहानीकार**
क्लिक –	उषा राजे सक्सेना (ब्रिटेन),	आस्था –	हेमराज सुंदर (मॉरीशस),
अभिशप्त –	तेजेन्द्र शर्मा (ब्रिटेन),	जड़ों से काटने पर –	कृष्ण बिहारी (अबू धाबी),
लाश –	सुमन कुमार घई (कनाडा),	**मातमपुर्सी –**	**अभिमन्यु अन्नत (मॉरीशस),**
दिशाएं –	रामदेव धुरंधर (मॉरीशस),	इंतजार –	अलका भटनागर (),
घर–वापसी –	**अर्चना पेन्यूली (डेनमार्क)**		

इकाई 5 द्रुतपाठ–

प्रवासी साहित्य के अन्य विविध रूप :– नाटक, निबंध, संस्मरण, पत्र–पत्रिकाएं, नेट पत्रिकाएं, तथा स्नेह ठाकुर, विवेकानन्द शर्मा डॉ0 कृष्ण कुमार, दिव्या माथुर, जय वर्मा, तोता राम सनाढ्य, सुरेश चन्द्र शुक्ल, गुलाब खण्डेलवाल, सुरजन परोही, ओंकारनाथ श्रीवास्तव, गौतम सचदेव।

द्रुतपाठ के लिए चयनित विधाओं, रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित सामान्य प्रश्न होंगे। निबन्धात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्याएँ	–	2 **X** 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 **X** 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 **X** 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 **X** 1	=	10 अंक
योग	–			50 अंक

नोट 01 :– व्याख्या इकाई संख्या 02 एवं 03 (उपन्यास एवं कविताओं) में से ही पूछी जाएगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01 से 04 तक पूछे जाएंगे।

02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– विशिष्ट साहित्य–धारा (प्रवासी हिन्दी साहित्य)

1 फीजी में हिन्दी का स्वरूप और विकास – विमलेश कान्ति वर्मा
2 अभिमन्यु अनत – कमल किशोर गोयनका
3 हिन्दी के यूरोपीय विद्वान : व्यक्तित्व और कृतित्व – मुरलीधर श्रीवास्तव
4 मॉरीशस के भारतीयों का इतिहास – के हजारी सिंह
5 विश्व दर्पण : अन्तर्राष्ट्रीय कविता संग्रह – सं. बलवन्त सिंह नौबत सिंह
6 फीजी में प्रवासी भारतीय – जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
7 फीजी के राष्ट्रीय कवि कमला प्रसाद मिश्र की कविताएं – सं. सुरेश ऋतुपर्ण
8 विश्व हिन्दी के भगीरथ – डॉ0 भक्त राम शर्मा
9 हिन्दी की विश्व यात्रा – डॉ0 सुरेश ऋतुपर्ण
10 ब्रिटेन में हिन्दी रचनाकार (ब्रिटेन के बारे में भारत का प्रकाशन) – सं. राधाकान्त भारती
11 विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम – जगदीश प्रसाद बरनावाल कुन्द
12 ब्रिटेन में हिन्दी – उषा राजे सक्सेना
13 देह की कीमत : कहानी संग्रह – तेजेन्द्र शर्मा
14 जैसे जनम कोई दरवाजा – मोहन राणा
15 मिट्टी की सुगन्ध – सं. उषा राजे सक्सेना
16 कहीं क्षितिज कहीं लहरें – डॉ0 सतेन्द्र श्रीवास्तव
17 कोई तो सुनेगा : काव्य संग्रह – उषा वर्मा
18 गगनांचल : विश्व हिन्दी अंक – डॉ0 कन्हैया लाल नन्दन
19 चेतना का आत्मसंघर्ष : हिन्दी की इक्कीसवीं सदी – सं. मंडल : डॉ0 सुरेन्द्र, गंभीर,
20 हिन्दी उत्सव ग्रन्थ : आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन, न्यूयॉर्क – डॉ0 अंजना संधीर, डॉ0 सुषम बेदी, – डॉ0 पी0 जयरामन
20 स्मारिका : सातवां विश्व हिन्दी सम्मेलन – सं. मंडल : डॉ0 कमल किशोर गोयनका, श्रीमती चित्रा मुद्गल, डॉ0 भगवान सिंह, अनुराग चतुर्वेदी
21 प्रतिनिधि अप्रवासी हिन्दी कहानियाँ – संपादक हिमांशु जोशी
22 मॉरीशसीय हिन्दी साहित्य – मुनीश्वरलाल चिंतामणि
23 विदेशों में हिन्दी – इंद्रदेव भोला
24 मॉरीशस का हिन्दी कथा साहित्य एक सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ0 कृष्ण कुमार झा
25 मॉरीशस लोक साहित्य और संस्कृति – प्रह्लाद रामशरण
26 भारतीय वांग्मय में मॉरीशस की संस्कृति – प्रह्लाद रामशरण
27 मॉरीशस का भोजपुरी साहित्य एवं भारतीय संस्कृति (शोध) – डॉ0 उदय नारायण गंगू
28 विलायत में भारतीय संस्थाएं – रमेश वैश्य मुरादाबादी
29 गंगा से मिसीसिपी तक – डॉ0 श्याम नारायण शुक्ल
30 मॉरीशस में भारतीयों का इतिहास – के0 हजारी सिंह
31 शतदल – हरिशंकर आदेश
32 हिन्दी का प्रवासी साहित्य (अमित प्रकाशन, नई दिल्ली) – कमल किशोर गोयनका
32 फ़ीजी का सृजनात्मक हिन्दी साहित्य (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली) – विमलेश कान्ति वर्मा
33 विदेश में हिन्दी पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध, (गगनांचल विशेषांक वर्ष 27 अंक 3–4 2004, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली) – (सं0) विमलेश कान्ति वर्मा
34 फीजी का हिन्दी काव्य साहित्य (भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली) – जोगिन्दर सिंह कँवल
35 फीजी विशेषांक, (गगनांचल, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली) – (सं0) दया प्रकाश सिन्हा
36 विदेश में हिन्दी (नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नई दिल्ली) – (सं0) ओम प्रकाश केजरीवाल
37 सूरीनाम का सृजनात्मक हिन्दी साहित्य (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली) – पुष्पिता अवस्थी
38 सूरीनाम में हिन्दुस्तानी (हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली) – भावना सक्सैना
39 फीजी में प्रवासी भारतीय (हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर) – शुचि गुप्ता

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम तृतीय–घ)
विशिष्ट साहित्य–धारा (प्राचीन भाषा–साहित्य)

संस्कृत

इकाई 1 कुमार सम्भव– कालिदास (पंचम सर्ग)

इकाई 2 कादम्बरी (शूद्रक वर्णन)– बाण
(विन्ध्यावटी वर्णन तक अर्थात् कथामुख के आरम्भ से पुष्पत्पपि विन्ध्यावटी नाम तक)

इकाई 3 अभिज्ञान शाकुन्तलम् – कालिदास (केवल चतुर्थ अंक)

इकाई 4 संस्कृत साहित्य का इतिहास (सामान्य परिचय मात्र)।

इकाई 5 पाठ्यग्रन्थों से संबंधित संधि और समास पर प्रश्न।
(केवल वे ही छात्र यह प्रश्न पत्र ले सकते हैं जिन्होंने बी0ए0, एम0ए0 अथवा समकक्ष परीक्षा संस्कृत में उत्तीर्ण न की हो।)

व्याख्याएँ	–	2 **X** 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 **X** 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 **X** 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 **X** 1	=	10 अंक
योग	–			50 अंक

नोट 01 :– इकाई 01 से 03 तक व्याख्या पूछी जाएगी। इकाई संख्या 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई संख्या 05 से लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

प्राकृत–अपभ्रंश

इकाई 1 कर्पूर मंजरी (सम्पूर्ण) – राजशेखर

इकाई 2 पउम चरिउ (प्रथम भाग) – स्वयंभू (केवल बारहवीं व तेरहवीं)

इकाई 3 प्राकृत विमर्श (वर्ष 1974 संस्करण) – सरयू प्रसाद अग्रवाल
प्रकाशन केन्द्र, रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ
उद्धरण– (1) गाथासप्तशती (3) रावण व हो (5) समराइच्चकहा (7) अभिज्ञान शाकुन्तलम् (11) रत्नावली (13) मृच्छकटिकम्।

इकाई 4 प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय

इकाई 5 प्राकृत तथा अपभ्रंश शब्दों के रूपों का ज्ञान

व्याख्याएँ	–	2 **X** 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 **X** 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 **X** 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 **X** 1	=	10 अंक
योग	–			50 अंक

नोट 01 :– इकाई 01 से 03 तक व्याख्या पूछी जाएगी। इकाई संख्या 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई संख्या 05 से लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।
नोट 02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना हेागा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– संस्कृत एवं प्राकृत–अपभ्रंश

1 संस्कृत साहित्य का इतिहास – ए0 वी0 कीथ
2 संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय
3 संस्कृत कवि दर्शन – डॉ0 भोलाशंकर व्यास
4 हायर संस्कृत ग्रामर (हिन्दी अनुवाद) – एन0 आर0 काले
5 संस्कृत व्याकरण – ह्विटने
6 संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – पं0 चन्द्रशेखर पाण्डेय/डॉ0 शान्तिकुमार नानूराम व्यास
7 अपभ्रंश भाषा का पारिभाषिक कोश – डॉ0 आदित्य प्रचंडिया
8 प्राकृत तथा उसका साहित्य – डॉ0 हरदेव बाहरी
9 अपभ्रंश साहित्य – डॉ0 हरवंश कोछड़
10 प्राकृत–अपभ्रंश साहित्य और उसका हिन्दी पर प्रभाव – डॉ0 रामसिंह तोमर
11 तुलनात्मक प्राकृत – पालि–अपभ्रंश व्याकरण – डॉ0 सुकुमार सेन
12 प्राकृत साहित्य का इतिहास – जगदीश चन्द्र जैन
13 अपभ्रंश भाषा का अध्ययन – डॉ0 वीरेन्द्र श्रीवास्तव
14 हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग – डॉ0 नामवर सिंह
15 पुरानी हिन्दी – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
16 हिन्दी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी
17 अपभ्रंश पीठिका – डॉ0 सुमन राजे
18 प्राकृत हिन्दी शब्दकोश – उदय चन्द जैन
19 प्राकृत भाषाओं का व्याकरण – हेमचन्द्र जोशी (अनु0)

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम चतुर्थ)
हिन्दी आलोचना

हिन्दी साहित्य की कुछ विधाएँ इतनी विकसित हो गयी है कि उनके स्वतंत्र सघन अध्ययन के लिए पृथक वैकल्पिक प्रश्नपत्र की आवश्यकता है। हिन्दी आलोचना ऐसी ही एक विधा है। इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आलोचक हो सकता है, जो हिन्दी पठन-पाठन का मूल प्रायोजन है।

इकाई 1

हिन्दी आलोचना का स्वरूप और विकास

इकाई 2

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की साहित्यिक मान्यताएँ

इकाई 3

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की साहित्यिक मान्यताएँ

इकाई 4

गजानन माधव मुक्तिबोध और अज्ञेय की साहित्यिक मान्यताएं

उत्तर आधुनिकता की अवधारणा

इकाई 5

द्रुतपाठ– रामविलास शर्मा, नगेन्द्र, विजयदेव नारायण शाही, मलयज, नंद दुलारे वाजपेयी।

द्रुतपाठ हेतु चयनित रचनाकारों में से केवल लघु उत्तरीय प्रश्न ही पूछे जाएंगे।

निबंधात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2 =	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	=	**50 अंक**

नोट 01 :– इकाई 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– हिन्दी आलोचना

1	समकालीन हिन्दी समीक्षा	– हुकुमचंद राजपाल
2	हिन्दी सैद्धान्तिक आलोचना	– डॉ0 रूपकिशोर मिश्र
3	आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप	– डॉ0 आनन्द प्रकाश दीक्षित
4	शुक्लोत्तर हिन्दी समीक्षा और डॉ0 नगेन्द्र	– डॉ0 विजय कुमार वेदालंकार
5	हिन्दी समीक्षा स्वरूप और सन्दर्भ	– डॉ0 रामदरश मिश्र
6	हिन्दी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार	– कृष्णदत्त पालीवाल
7	हिन्दी आलोचना का सैद्धान्तिक आधार	– कृष्णदत्त पालीवाल
8	नामवरसिंह आलोचना की दूसरी परम्परा	– संपादक कमला प्रसाद

9	आलोचना के मान	– डॉ0 शिवदान सिंह चौहान
10	कामायनी के अध्ययन की समस्याएं	– डॉ0 नगेन्द्र
11	साहित्य का इतिहास दर्शन	– आचार्य नलिन विलोचन शर्मा
12	महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण	– डॉ0 रामविलास शर्मा
13	आलोचना के मान	– शिवदान सिंह चौहान
14	आलोचना के सिद्धान्त	– शिवदान सिंह चौहान
15	हिन्दी साहित्य की जनवादी परम्परा	– प्रकाश चन्द्र गुप्त
16	प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड	– रांगेय राघव
17	आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ	– नामवर सिंह
18	हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि	– विश्वंभर नाथ उपाध्याय
19	मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धान्त	– शिवकुमार मिश्रा
20	मानव मूल्य और साहित्य	– धर्मवीर भारती
21	नई कविता के प्रतिमान	– लक्ष्मीकांत वर्मा
22	हिन्दी साहित्य और संवदेना का विकास	– रामस्वरुप चतुर्वेदी
23	साहित्य और साहित्यकार का दायित्व	– विजय देव नारायण साही
24	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	– देवराज
25	आधुनिकता और हिन्दी साहित्य	– इन्द्रनाथ मदान
26	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	– बच्चन सिंह
27	हिन्दी आलोचना बीसवीं शताब्दी	– निर्मला जैन
28	आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सजृन और आलोचना	– चंद्रकान्त बांदिवडेकर
29	आलोचना की पहली किताब	– नन्द्र किशोर आचार्य, विष्णु खरे
30	नई कविता का परिप्रेक्ष्य	– परमानंद श्रीवास्तव
31	हिन्दी आलोचना कुछ कहानियाँ : कुछ विचार	– विश्वनाथ त्रिपाठी
32	हिन्दी कविता का समकालीन परिदृश्य	– हरदयाल
33	आधुनिक हिन्दी कविता	– विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
34	हिन्दी आलोचना का विकास	– नन्द किशोर नवल
35	हिन्दी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार	– रामचन्द्र तिवारी

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम पंचम (क))
लघु शोध प्रबन्ध

पूर्णांक 100 अंक

आवश्यक निर्देश –

छात्र/छात्रा विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक के सहयोग एवं अनुमति से लघु शोध प्रबन्ध के विषय का चयन करेगा/करेगी। लघु शोध प्रबन्ध लगभग 50 पृष्ठों का होना चाहिए। लघु शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा होगा।

प्रबन्ध लेखन	– 50 अंक
मौखिकी	– 50 अंक

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम पंचम (ख))
निबंध लेखन

पूर्णांक 100 अंक

निबंध लेखन का विषय हिन्दी साहित्य, भाषा एवं उसके इतिहास से संबंधित होगा। अन्य प्रश्न पत्रों की भांति अनिवार्यतः तत्संबंधित कक्षाएं लगाई जाएंगी।

आवश्यक निर्देश –

छात्र/छात्रा को हिन्दी निबंध लेखन किसी एक विषय पर (समयावधि 1.30 घण्टे में) केन्द्र पर ही लिखना होगा। इसका मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा।

निबन्ध लेखन	– 50 अंक
मौखिकी	– 50 अंक